राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर द्वारा आयोजित

AKSHANSH PUBLICATION

प्रयोगशाला सहायक

LAB ASSISTANT

PAPER-I

सामान्य ज्ञान

राजस्थान का भौगोलिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं सामान्य ज्ञान
विश्व एवं भारत का सामान्य ज्ञान, शैक्षणिक मनोविज्ञान

सम्पूर्ण स्टडी गाइड

2022 परीक्षा सहित गत 10 वर्षों के सॉल्वड पेपर्स का समावेश

2500+ अध्यायवार प्रश्न सहित

प्रश्नों का व्याख्यात्मक हल
लक्ष्य क्लासेज़, उदयपुर
के यूट्यूब चैनल पर उपलब्ध

प्रदीप सर | कुणाल सर | करण सर | राम सर | नीरज सर

अक्षांश पब्लिकेशन
M. 9079798005, 6376491126
Plot No 1104, Shiksha Mandir, Sec 4, Circle, Main Road, Udaipur

राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर द्वारा आयोजित

प्रयोगशाला सहायक

LAB ASSISTANT

PAPER-I

सामान्य ज्ञान

राजस्थान का भौगोलिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं सामान्य ज्ञान
विश्व एवं भारत का सामान्य ज्ञान, शैक्षणिक मनोविज्ञान

सम्पूर्ण स्टडी गाइड

"अक्षांश प्रकाशन की समस्त पुस्तकें लक्ष्य क्लासेज़, उदयपुर के अनुभवी शिक्षकों के मार्गदर्शन एवं अक्षांश प्रकाशन की समर्पित टीम के सहयोग से तैयार की गई हैं।"

संपादक
प्रदीप सर, कुणाल सर, करण सर, राम सर, नीरज सर

सह संपादक
राजवर्धन बेगड़, गंगा सिंह, प्रकाश मेघवाल, विकास नाथ

प्रकाशन
अक्षांश प्रकाशन, उदयपुर (राज.)

MRP : ₹860

नोट :- अब लक्ष्य क्लासेज़ की सभी आगामी पुस्तकें केवल 'अक्षांश प्रकाशन' के माध्यम से ही प्रकाशित की जाएंगी। ये सभी पुस्तकें बाजार में 'अक्षांश' नाम से ही उपलब्ध होंगी। विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि आगामी समय में 'लक्ष्य' नाम से कोई भी पुस्तक प्रकाशित नहीं की जाएगी। इसलिए कृपया पुस्तक खरीदते समय केवल 'अक्षांश प्रकाशन' के नाम से प्रकाशित और अधिकृत पुस्तकें ही बुक स्टोर्स से प्राप्त करें, ताकि आपको प्रमाणिक, अद्यतन एवं परीक्षा-उपयुक्त सामग्री प्राप्त हो।भविष्य में 'लक्ष्य' नाम से प्रकाशित किसी भी पुस्तक की सामग्री या गुणवत्ता की जिम्मेदारी 'अक्षांश प्रकाशन' या 'लक्ष्य क्लासेज़, उदयपुर' की नहीं होगी।

प्रकाशन

अक्षांश प्रकाशन

Plot No 1104, Shiksha Mandir, Sec 4, Circle,
Main Road, Udaipur

लक्ष्य क्लासेज़, उदयपुर से जुड़ने के लिए QR CODE स्कैन करे

TELEGRAM INSTAGRAM YOUTUBE FACEBOOK WHATSAPP

बुक कोड - AP0024

©सर्वाधिकार - अक्षांश प्रकाशन
lakshyaclassesudr@gmail.com

मुख्य वितरक - लक्ष्य क्लासेज़, उदयपुर
M. 9079798005, 6376491126

अक्षांश प्रकाशन ने इस पुस्तक के तथ्यों तथा विवरणों को उचित स्त्रोतों से प्राप्त किया है। इस पुस्तक में प्रकाशित सभी प्रकार की सामग्री पूर्णतः तथ्यात्मक विश्लेषण पर आधारित है। इस पुस्तक के किसी भी भाग और सामग्री को अक्षांश प्रकाशन की अनुमति और जानकारी के बिना अन्यत्र प्रकाशित या प्रिन्ट करना अनुचित है, यदि ऐसा पाया जाता है तो व्यक्ति या संस्थान स्वयं जिम्मेदार है।

विषय वस्तु

01 राजस्थान का इतिहास

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	राजस्थान के इतिहास के स्त्रोत	1 – 7
2.	प्राचीन सभ्यताएँ	8 – 15
3.	प्रमुख राजवंश, प्रशासनिक एवं राजस्व व्यवस्था	16 – 39
4.	मुगल – राजपूत संबंध	40 – 50
5.	रियासतें एवं ब्रिटिश संधियां, 1857 का जनआंदोलन	51 – 56
6.	किसान आंदोलन	57 – 65
7.	जनजातीय आंदोलन	66 – 69
8.	राजनीतिक जनजागरण एवं प्रजामंडल आन्दोलन	70 – 82
9.	राजस्थान का एकीकरण	83 – 86
10.	प्रमुख व्यक्तित्व	87 – 92

02 राजस्थान की कला एवं संस्कृति

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	प्रमुख दुर्ग	94 – 104
2.	महल एवं स्मारक	105 – 109
3.	हवेलियाँ, छतरियाँ एवं बावड़ियाँ	110 – 116
4.	मंदिर, मकबरे, मस्जिद, दरगाह	117 – 122
5.	मेले एवं त्योहार	123 – 129
6.	लोक गीत एवं संगीत	130 – 134
7.	लोक नृत्य एवं नाट्य	135 – 142
8.	लोक देवता एवं लोक देवियाँ	143 – 149
9.	संत सम्प्रदाय एवं साहित्य	150 – 156
10.	आभूषण, वेशभूषा एवं खान-पान	157 – 164
11.	रीति-रिवाज एवं प्रथाएँ	165 – 170
12.	राजस्थानी भाषा एवं बोलियाँ	171 – 173

03 राजस्थान का भूगोल

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	स्थिति एवं विस्तार	175 – 177
2.	भौतिक स्वरुप एवं विभाजन	178 – 183
3.	अपवाह तंत्र एवं जल संरक्षण	184 – 190
4.	जलवायु	191 – 196
5.	मृदा	197 – 198
6.	प्राकृतिक वनस्पति एवं वन और वन्यजीव संरक्षण	199 – 203
7.	कृषि जलवायु प्रदेश एवं प्रमुख फसलें	204 – 222
8.	पशुधन	223 – 228
9.	बहुउद्देशीय एवं सिंचाई परियोजनाएँ	229 – 232
10.	परिवहन	233 – 236
11.	खनिज संपदा	237 – 254

04 भारत का इतिहास

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	सिंधु घाटी सभ्यता	256 – 260
2.	वैदिक सभ्यता	261 – 265
3.	जैन एवं बौद्ध धर्म	266 – 269
4.	महाजनपद काल	270 – 272
5.	मौर्य साम्राज्य	273 – 280
6.	गुप्त साम्राज्य	281 – 286
7.	गुप्तोत्तर काल	287 – 301
8.	भक्ति एवं सूफी आन्दोलन	302 – 310
9.	मुगल काल एवं मुगलकालीन प्रशासन	311 – 319
10.	1857 की क्रांति	320 – 323
11.	पुनर्जागरण एवं सामाजिक सुधार	324 – 329
12.	भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन	330 – 344

05 भारतीय संविधान एवं राजव्यवस्था

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	भारतीय संविधान का निर्माण	346 – 348
2.	भारतीय संविधान की विशेषताएँ	349 – 351
3.	प्रस्तावना	352 – 354
4.	मौलिक अधिकार	355 – 360
5.	नीति निदेशक तत्त्व	361 – 364

6.	मूल कर्तव्य	365 – 366
7.	संवैधानिक संशोधन	367 – 374
8.	राष्ट्रपति	375 – 379
9.	प्रधानमंत्री एवं मंत्रिपरिषद्	380 – 383
10.	संसद	384 – 395
11.	उच्चतम न्यायालय	396 – 400

06 भारत का भूगोल

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	स्थिति एवं विस्तार	402 – 404
2.	भौतिक स्वरुप	405 – 416
3.	जलवायु एवं मानसून	417 – 421
4.	अपवाह तंत्र एवं झीलें	422 – 430
5.	बहुउद्देशीय परियोजना	431 – 433
6.	प्राकृतिक वनस्पति	434 – 436
7.	वन्यजीव	437 – 441
8.	मृदा	442 – 446
9.	प्रमुख फसले	447 – 451
10.	खनिज एवं ऊर्जा संसाधन	452 – 461
11.	प्रमुख उद्योग	462 – 467
12.	परिवहन	468 – 474
13.	भारत की जनसंख्या	475 – 480

07 विश्व का भूगोल

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	एशिया महाद्वीप	482 – 485
2.	अफ्रीका महाद्वीप	486 – 489
3.	उत्तरी अमेरिका महाद्वीप	490 – 493
4.	दक्षिणी अमेरिका महाद्वीप	494 – 497
5.	यूरोप महाद्वीप	498 – 502
6.	आस्ट्रेलिया महाद्वीप	503 – 505
7.	अंटार्कटिका महाद्वीप	506
8.	विश्व के महासागर	507 – 508
9.	महासागरीय धाराएँ	509 – 511
10.	विश्व के प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र	512 – 514

08 शैक्षणिक मनोविज्ञान

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	शिक्षा मनोविज्ञान अर्थ, क्षेत्र एवं उपयोगिता	516 – 523
2.	बाल विकास	524 – 537
3.	अधिगम अर्थ, प्रकार एवं सिद्धांत	538 – 560
4.	व्यक्तित्व, अर्थ, सिद्धांत एवं माप	561 – 571
5.	व्यक्तित्व विभिन्नता	572 – 582
6.	बुद्धि और सृजनात्मकता	583 – 589
7.	समायोजन एवं कुसमायोजन	590 – 596
8.	अभिप्रेरणा	597 – 600
9.	अधिगम के निहितार्थ	601 - 605

09 विगत वर्ष के प्रश्न पत्र

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	प्रयोगशाला सहायक परीक्षा (GK)- 2016	607 – 609
2.	प्रयोगशाला सहायक परीक्षा (GK)- 2018	610 – 612
3.	प्रयोगशाला सहायक परीक्षा (GK)- 28/06/2022	613 – 617
4.	प्रयोगशाला सहायक परीक्षा (GK)- 29/06/2022	618 – 622
5.	प्रयोगशाला सहायक परीक्षा (GK) (G.) - 30/06/2022	623 – 629
6.	प्रयोगशाला सहायक परीक्षा (GK) (H.M.)- 30/06/2022	630 – 631

राजस्थान का इतिहास

राजस्थान के इतिहास का परिचय

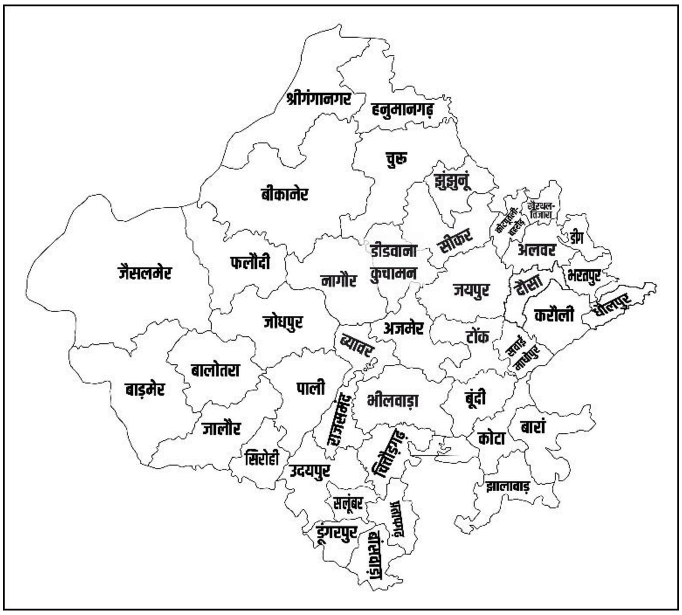

- **वर्ष 1949** से पहले **"राजस्थान"** नाम की कोई भौगोलिक इकाई अस्तित्व में नहीं थी।
- **वर्ष 1800** में **जॉर्ज थॉमस** ने इस भू-भाग के लिए **"राजपूताना"** शब्द का प्रयोग किया।
- **वर्ष 1829** में **कर्नल जेम्स टॉड** ने अपनी पुस्तक **"एनल्स एण्ड एण्टीक्वीटीज ऑफ राजस्थान"** में इसे **"रायथान" या "राजस्थान"** नाम दिया।
- स्वतंत्रता के बाद जब विभिन्न रियासतों का एकीकरण हुआ, तो **30 मार्च, 1949** को इस क्षेत्र का नाम **"राजस्थान"** रखा गया। राजस्थान का नामकरण विभिन्न राजवंशों और उनकी परंपराओं के साथ-साथ क्षेत्र की ऐतिहासिक पहचान को भी समेटता है।
- प्राचीन साहित्य और अभिलेखों में वर्तमान राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों के लिए भिन्न-भिन्न नाम मिलते हैं, जो भौगोलिक विशेषताओं या वहां की बसी जातियों के नाम पर आधारित होते थे।

प्राचीनतम नाम और उनके विवरण-

- **मरु और धन्व-** जोधपुर संभाग के मरुस्थल के लिए प्रयुक्त होते थे। जोधपुर को पहले **"मरू" और "मरूवार"** कहा जाता था और बाद में इसे "मारवाड़" कहा गया।
- **जांगल-** इस नाम का प्रयोग उन क्षेत्रों के लिए किया गया, जहां शमी, कैर या पीलू होते थे। बीकानेर और नागौर का क्षेत्र "जांगल देश" कहलाता था।

भौगोलिक विशेषताओं के आधार पर नामित क्षेत्र-

- **कांठल-** माही नदी के किनारे स्थित प्रतापगढ़ का भू-भाग।
- **छप्पन का मैदान-** प्रतापगढ़-बाँसवाड़ा के मध्य, जहां 56 गाँवों का समूह था।
- **ऊपरमाल-** भैंसरोडगढ़ से बिजौलिया तक का पठारी क्षेत्र।
- **गिरवा-** उदयपुर के आस-पास का पहाड़ी क्षेत्र।

अन्य प्राचीन नाम-

- **माँड-** जैसलमेर का प्राचीन नाम।
- **बागड़-** डूंगरपुर और बाँसवाड़ा का क्षेत्र।
- **हाड़ौती-** कोटा और बूंदी के त्रिकोण का प्रदेश।
- **शेखावाटी-** सीकर, झुंझुनूं और चूरू का क्षेत्र।

राजस्थान के प्रमुख शिलालेख

- उत्कीर्ण अभिलेखों के अध्ययन को 'एपीग्राफी' (पुरालेखशास्त्र) कहा जाता है।
- अभिलेखों एवं दूसरे पुराने दस्तावेजों की प्राचीन लिपि का अध्ययन 'पेलियोग्राफी' (पुरालिपिशास्त्र) कहलाता है।
- भारतीय लिपियों पर पहला वैज्ञानिक अध्ययन डॉ. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा ने किया। श्री ओझा ने भारतीय लिपियों पर 'भारतीय प्राचीन लिपिमाता' पुस्तक की रचना की।
- **शिलालेख/अभिलेख -** शिलालेख या अभिलेख वे लिखित सामग्री होती है, जो पत्थर की शिलाओं, दीवारों, स्तम्भों आदि पर अंकित होती है।
- **प्रशस्ति -** जब किसी शिलालेख में किसी शासक की उपलब्धियों और उनकी महानता का बखान किया जाता है, तो उसे प्रशस्ति कहा जाता है।
- **भारत में संस्कृत भाषा का प्रथम अभिलेख-** शक शासक रूद्रदामन का 'जूनागढ़ अभिलेख' (गुजरात)।

नांदसा यूप-स्तम्भ लेख (225 ई.)

- भीलवाड़ा जिले में स्थित इस यूप-स्तम्भ की स्थापना 225 ई. में की गई थी। इस लेख से पता चलता है कि शक्तिगुणगुरु नामक व्यक्ति ने यहाँ षष्ठिरात्र (छः रातों में सम्पन्न) यज्ञ किया था। इस स्तम्भ की स्थापना पश्चिमी (शक) क्षत्रपों के राज्य-काल में सोम द्वारा की गई थी।

घोसुण्डी शिलालेख (द्वितीय शताब्दी ई.पू.)

- यह शिलालेख चित्तौड़ से सात मील दूर घोसुण्डी गाँव से प्राप्त हुआ था।
- इस लेख की भाषा संस्कृत है और लिपि ब्राह्मी है।
- इस लेख में उल्लेख है कि गजवंश के पाराशरी के पुत्र सर्वतात ने यहाँ अश्वमेध यज्ञ किया था।

- शिलालेख में द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व में भागवत धर्म का प्रचार, संकर्षण तथा वासुदेव की मान्यता और अश्वमेध यज्ञ के प्रचलन का वर्णन मिलता है।
- घोसुण्डी शिलालेख को सर्वप्रथम डॉ. भंडारकर ने पढ़ा था।
- वर्तमान में यह शिलालेख उदयपुर संग्रहालय में सुरक्षित है।

बड़वा यूप-स्तम्भ लेख (238-39 ई.)
- यह लेख बारां जिले के बड़वा नामक स्थान से प्राप्त कुल 3 यूप स्तम्भों में से एक पर उत्कीर्ण है।
- इस लेख में मौखरी वंश के शासकों का सर्वप्रथम उल्लेख किया गया है।
- इसमें त्रिरात्र यज्ञों का उल्लेख है, जिन्हें मौखरी महासेनापति बल के तीन पुत्रों — बलवर्धन, सोमदेव और बलसिंह ने संपन्न किया था।
- इस शिलालेख की **भाषा संस्कृत** और **लिपि ब्राह्मी** है।

गंगधार का लेख (423 ई.)
- यह लेख झालावाड़ जिले में गंगधार नामक स्थान से प्राप्त हुआ है जिसकी भाषा संस्कृत है। इस लेख के अनुसार राजा विश्वकर्मा के मंत्री मयूराक्ष ने एक विष्णु मन्दिर का निर्माण करवाया था। उसने तांत्रिक शैली का मातृगृह और एक बावड़ी का भी निर्माण करवाया था। इस लेख से पाँचवीं शताब्दी की सामंती व्यवस्था के बारे में भी जानकारी प्राप्त होती है।

बड़ली गाँव का शिलालेख (443 ई. पूर्व)
- यह शिलालेख अजमेर जिले के **बड़ली गाँव के भिलोत माता मंदिर** से एक स्तम्भ के टुकड़े के रूप में प्राप्त हुआ।
- यह राजस्थान का सबसे **प्राचीन शिलालेख** है।
- शिलालेख की **लिपि ब्राह्मी** है।
- यह शिलालेख खंडित अवस्था में 1912 ई. में डॉ. जी. एच. ओझा को प्राप्त हुआ था।
- वर्तमान में यह शिलालेख अजमेर संग्रहालय में रखा गया है।

भाब्रू शिलालेख
- यह शिलालेख **1837 ई. में कैप्टन बर्ट** को बीजक की पहाड़ी (बैराठ) से प्राप्त हुआ था।
- इस शिलालेख की **भाषा प्राकृत और लिपि ब्राह्मी** है।
- इस अभिलेख में सम्राट अशोक ने बुद्ध धर्म और संघ में आस्था व्यक्त की है।
- यह शिलालेख अशोक के बौद्ध धर्म के अनुयायी होने का प्रमाण प्रदान करता है।

बैराठ शिलालेख
- यह शिलालेख बैराठ के पास **भीम डूंगरी की तलहटी** में एक चट्टान पर उत्कीर्ण है।
- इस शिलालेख की खोज **1871-72 ई.** में पुरातत्त्ववेत्ता **कार्लाइल** ने की थी।
- शिलालेख की **भाषा प्राकृत और लिपि ब्राह्मी** है।

नगरी का लेख (200-150 ई.पू.)
- यह शिलालेख डॉ. ओझा को नगरी (चित्तौड़गढ़) नामक स्थान पर प्राप्त हुआ था।
- डॉ. ओझा ने इस लेख को उदयपुर संग्रहालय में रखा।
- इसकी लिपि घोसुण्डी के लेख की लिपि से मिलती-जुलती है।

विजयगढ़ यूप-स्तम्भ लेख (371 ई.)
- यह शिलालेख भरतपुर के बयाना स्थित विजयगढ़ दुर्ग की दीवार पर पाया गया।
- इसमें यशोवर्मन के पुत्र विष्णुवर्धन द्वारा मालव युग में पुंडरिक यज्ञ करने का उल्लेख है।

नगरी का शिलालेख (424 ई.)
- यह शिलालेख डी. आर. भंडारकर को नगरी (चित्तौड़गढ़) के उत्खनन के दौरान प्राप्त हुआ था।
- वर्तमान में यह शिलालेख अजमेर संग्रहालय में सुरक्षित है।
- शिलालेख की **भाषा संस्कृत** और **लिपि नागरी** है।

भ्रमर माता का लेख (490 ई.)
- यह शिलालेख प्रतापगढ़ की छोटी सादड़ी स्थित भ्रमर माता के मंदिर से प्राप्त हुआ था।
- यह लेख पाँचवीं शताब्दी की राजनीतिक स्थिति को समझने में महत्त्वपूर्ण है।
- इस प्रशस्ति का रचनाकार मित्रसोम का पुत्र ब्रह्मसोम था और लेखक पूर्वा था।

बसन्तगढ़ का लेख (625 ई.)
- यह शिलालेख सिरोही जिले के बसन्तगढ़ से वि.सं. 682 का प्राप्त हुआ है, जो चावड़ा वंश के शासक वर्मलात के समय का है।
- इस लेख से यह ज्ञात होता है कि वर्मलात उस समय अर्बुद देश का स्वामी था।

  इस लेख में सामन्त प्रथा का भी उल्लेख मिलता है।
- वर्तमान में यह शिलालेख राजकीय म्यूजियम, अजमेर में रखा गया है।

सांमोली शिलालेख (646 ई.)
- उदयपुर जिले के सांमोली ग्राम से प्राप्त यह लेख गुहिल वंश के शासक शिलादित्य के समय का है। मेवाड़ के गुहिल वंश के समय को निश्चित करने तथा उस समय की आर्थिक और साहित्यिक स्थिति की जानकारी के लिए यह लेख विशेष महत्त्वपूर्ण है।

अपराजित का शिलालेख (661 ई.)
- यह शिलालेख **नागदा गाँव** के पास स्थित **कुंडेश्वर के मंदिर** में **डॉ. ओझा** को प्राप्त हुआ था।
- डॉ. ओझा ने इसे उदयपुर के **विक्टोरिया हॉल संग्रहालय** में रखवाया।

राजस्थान की
कला एवं संस्कृति

- **शुक्र नीति** - राज्य को मानव शरीर का अंग मानते हुए शुक्र नीति के अनुसार दुर्ग को शरीर के प्रमुख अंग **'हाथ'** की संज्ञा दी गई है।
- शुक्र नीति के अनुसार **सैन्य दुर्ग सर्वश्रेष्ठ** श्रेणी का **दुर्ग** है।

शुक्र नीति के अनुसार दुर्ग 9 श्रेणियों के होते हैं-

1. **गिरी दुर्ग** – पहाड़ी पर निर्मित दुर्ग। राजस्थान के अधिकांश दुर्ग इसी श्रेणी में निर्मित है।
   उदाहरण - मेहरानगढ़(जोधपुर), तारागढ़(अजमेर)।
2. **एरण दुर्ग** – ऐसा दुर्ग जहाँ तक पहुँचने का मार्ग कठिन और दुर्गम हो।
   उदाहरण - चित्तौडगढ़ और जालौर दुर्ग।
3. **वन दुर्ग** – घने जंगलों में निर्मित दुर्ग।
   उदाहरण - सिवाना का दुर्ग।
4. **धान्वन दुर्ग** – समतल सतह पर निर्मित दुर्ग।
   उदाहरण - जैसलमेर का दुर्ग।
5. **जल दुर्ग** – नदियों के संगम स्थल पर निर्मित दुर्ग।
   उदाहरण - गागरोण दुर्ग।
6. **पारिख दुर्ग** – चारों तरफ गहरी खाई युक्त दुर्ग।
   उदाहरण- भरतपुर दुर्ग, जूनागढ़ दुर्ग।
7. **पारिध दुर्ग** – ऐसा दुर्ग जिसके चारों तरफ परकोटा हो।
   उदाहरण- चित्तौडगढ़, जैसलमेर दुर्ग।
8. **सैन्य दुर्ग** – ऐसा दुर्ग जिसमें सैनिक निवास करते हो।
9. **सहाय दुर्ग** – जहाँ सैनिक व आमजन दोनों निवास करते हो।

- राजस्थान में महाराष्ट्र एवं मध्य प्रदेश के पश्चात् सर्वाधिक दुर्गों का निर्माण हुआ है।
- राजस्थान में दुर्गों के स्थापना का विकास का प्रथम आधार **कालीबंगा की खुदाई** में मिलता है।

कौटिल्य के अनुसार दुर्ग की 4 श्रेणियाँ है-

- 1. औदुक दुर्ग 2. पर्वत दुर्ग
  3. धान्वन दुर्ग 4. वन दुर्ग
- **चित्तौड़ दुर्ग** धान्वन श्रेणी के दुर्ग को छोड़कर सभी श्रेणी का दुर्ग है।

राजस्थान के 6 दुर्ग यूनेस्को की वर्ल्ड हेरिटेज साइट में शामिल -

- 1. आमेर दुर्ग 2. गागरोण दुर्ग
  3. कुम्भलगढ़ दुर्ग 4. जैसलमेर दुर्ग
  5. रणथम्भौर दुर्ग 6. चित्तौड़गढ़ दुर्ग।
- ये दुर्ग **जून, 2013** में नोमपेन्ह (कम्बोडिया) में हुई वर्ल्ड हेरिटेज कमेटी की बैठक में यूनेस्को साइट की सूची में शामिल किए गये।

राजस्थान के प्रसिद्ध दुर्ग-

- राजस्थान का सबसे प्राचीन दुर्ग – भटनेर (हनुमानगढ़)
- मिट्टी से निर्मित दुर्ग –
  1. लोहागढ़ दुर्ग 2. भटनेर दुर्ग
- **राजस्थान का सबसे नवीन दुर्ग –**
  1. मोहनगढ़ (जैसलमेर) 2. लोहागढ़ (भरतपुर)
- सर्वाधिक आक्रमण झेलने वाला दुर्ग – तारागढ़ (अजमेर)
- सर्वाधिक विदेशी आक्रमण वाला दुर्ग – भटनेर दुर्ग
- सर्वाधिक गहराई में स्थित दुर्ग – लोहागढ़
- सर्वाधिक बुर्जों वाला किला – सोनारगढ़

सोनारगढ़/जैसलमेर का किला

- जैसलमेर के सोनारगढ़ के नाम से प्रसिद्ध दुर्ग की नींव **जैसल भाटी** ने 1155 ई. में रखी।
- इस दुर्ग का निर्माण शालिवाहन द्वितीय ने पूर्ण करवाया।
- **उपनाम -** सोनगढ़, गौहरारगढ़, त्रिकूटगढ़ एवं 'उत्तर भड़ किवाड़'।
- **प्रकार** - धान्वन श्रेणी का दुर्ग।
- यह त्रिकुट पहाड़ी पर त्रिभुजाकार आकृति में निर्मित है।
- पीले पत्थरों से निर्मित यह किला **राजस्थान का दूसरा बड़ा आवासीय किला है**।
- सोनारगढ़ दुर्ग का निर्माण **चूने का प्रयोग किए बिना पत्थरों को जोड़कर** किया गया है।
- जैसलमेर दुर्ग विश्व का एकमात्र दुर्ग है जिसकी **छत लकड़ी की** बनी हुई है।
- सोनारगढ़ किले का **प्रवेश द्वार अक्षयपोल** कहलाता है।
- सोनारगढ़ किले के पास ही **गढ़ीसर/घडसीसर झील** स्थित है।

प्रमुख दर्शनीय स्थल-

(1) **99 बुर्ज-** यह दुर्ग **सर्वाधिक बुर्जों वाला (99 बुर्जे)** किला है।
(2) **लक्ष्मीनारायण जी का मन्दिर-** इस दुर्ग का प्रमुख मंदिर **लक्ष्मीनारायण जी का मन्दिर** है, जिसमें जैसलमेर शासकों के आराध्य देव की मूर्ति मेड़ता से लाई गई।
(3) इस दुर्ग का प्राचीन मंदिर **आदिनाथ जी (जैन मंदिर)** का है।
(4) जैसलु कुआँ
(5) कमरकोट (घाघरानुमा परकोटा)
(6) **जिनभद्र सूरी भंडार -** यहाँ प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ रखे हुए है।
(7) **शीश महल -** दुर्ग में महारावल अखैसिंह द्वारा निर्मित सर्वोत्तम विलास।

ढाई साके-:

- जैसलमेर दुर्ग ढाई साकों के लिए प्रसिद्ध है।
- **प्रथम साका -** जैसलमेर का प्रथम साका भाटी शासक **मूलराज द्वितीय और अलाउद्दीन खिलजी** के मध्य 1312 ई. में हुआ, इसमें मूलराज द्वितीय के नेतृत्व में केसरिया हुआ।
- **दूसरा साका -** जैसलमेर का दूसरा साका **रावल दूदा और दिल्ली के फिरोजशाह तुगलक** के मध्य 1370-71 ई. में हुआ।
- **तीसरा अर्द्ध साका** - 1550 ई. में जैसलमेर शासक राव **लूणकरण और कंधार शासक अमीर अली** के मध्य हुआ। इसमें वीरों ने केसरिया तो किया लेकिन जौहर नहीं हुआ, इसलिए इसे अर्द्ध साका कहा।
- **अबुल फजल** ने इस दुर्ग के बारे में कहा कि **"घोड़ा कीजे काठ का पग किजे पाषाण शरीर राखे बखतरबंद ते पहुँचे जैसाण।"**

नोट-
- राजस्थान इतिहास का यह **एकमात्र अर्द्ध साका** हुआ।
- राजस्थान के इस दुर्ग को **यूनेस्को** ने वर्ष 2013 में **विश्व विरासत** में शामिल किया।
- फिल्म निर्देशक **सत्यजीत रे** द्वारा इस दुर्ग पर '**सोनार किला फिल्म**' का निर्माण किया गया।
- दूर से देखने पर यह दुर्ग पहाड़ी पर **"लंगर डाले एक जहाज का आभास"** कराता है।

भटनेर दुर्ग (हनुमानगढ़)

- इस दुर्ग का निर्माण तीसरी सदी के अन्त (295 ई.) में **भूपत भाटी** द्वारा **सरस्वती या घग्घर नदी** के तट पर करवाया गया था।
- इस दुर्ग का अन्य नाम **'उत्तरी सीमा का प्रहरी'** है।
- **वास्तुकार -** कैकेया।
- **श्रेणी -** धान्वन दुर्ग।
- इस दुर्ग में **52** विशाल बुर्ज हैं।
- किले का निर्माण पक्की हुई ईटों और चूने से हुआ था।
- भटनेर दुर्ग राजस्थान का **सबसे प्राचीन दुर्ग** है।
- भटनेर दुर्ग पर **सबसे अधिक विदेशी आक्रमण** हुए।
- 1003 ई. में **महमूद गजनवी** का प्रथम विदेशी आक्रमण हुआ तथा अंतिम विदेशी आक्रमण 1532-34 ई. का **कामरान** का हुआ।
- यह दुर्ग राजस्थान का एकमात्र ऐसा दुर्ग है जहाँ पर **मुस्लिम महिलाओं ने जौहर** किया। यह जौहर 1398 ई. में हुआ था। उस समय भटनेर का शासक **दूलचंद** था और आक्रमण **तैमूर लंग** का हुआ।
- इस जौहर का प्रमाण तैमूर लंग की आत्मकथा **'तुजुक ए तैमुरी'** में मिलता है।
- **1805 ई.** में बीकानेर शासक **सूरतसिंह** ने भटनेर शासक **जावतासिंह भट्टी** को मंगलवार के दिन पराजित कर इसका नामकरण **हनुमानगढ़** किया।
- इस दुर्ग में बलबन के किलेदार **'शेर खाँ की कब्र'** है।
- भटनेर दुर्ग में एक प्रवेशद्वार पर एक राजा के साथ **6** नारियों की आकृतियाँ बनी हैं।

जूनागढ़ (बीकानेर)

- **निर्माण -** 1589-94 ई. में **रायसिंह** के द्वारा करवाया गया।
- यह किला राती घाटी में **'बीका की टेकरी'** के ऊपर निर्मित दुर्ग है।
- जूनागढ़ का दुर्ग **'धान्वन दुर्ग'** की श्रेणी में आता है।

उपनाम- जमीन का जेवर, लालगढ़, रातीघाटी का किला।
- यह दुर्ग **सूरसागर झील के किनारे** स्थित है।
- **दुर्ग की आकृति -** चतुष्कोण या चतुर्भुजाकृति।

प्रवेश द्वार -:
- **बाहरी -** कर्णपोल एवं चाँदपोल।
- **भीतरी -** दौलतपोल, फतेहपोल, रतनपोल, सूरजपोल एवं ध्रुवपोल।
- सूरज पोल पर **राजा रायसिंह की प्रशस्ति** उत्कीर्ण है। (**प्रशस्ति रचयिता- जैता**)
- **मुख्य द्वार सूरज पोल** पर गजारूढ़ '**जयमल व फत्ता**' की मूर्तियाँ स्थित है, जो मेवाड़ के महाराणा उदयसिंह के सेनापति थे।

दुर्ग के दर्शनीय स्थल :-

(1) अनूप संग्रहालय (2) फूल महल
(3) चन्द्र महल (4) लाल निवास
(5) छत्र महल (6) गंगा निवास महल
(7) दलेल निवास महल (8) रतन निवास महल।
(9) **दुर्ग में दो कुएँ** - रामसर एवं रानीसर।
(10) 33 **करोड़ देवी-देवताओं का मंदिर -** यहाँ सिंह पर सवार गणपति (हेरंब गणपति) की दुर्लभ प्रतिमा है।
(11) जूनागढ़ के दुर्ग में **नागणेची माता व लक्ष्मीनारायण जी** का मंदिर है। लक्ष्मीनाराय जी का मंदिर जूनागढ़ का आकर्षक मंदिर है, इसका **निर्माण रतनसिंह** ने करवाया।

- राजस्थान में पहली बार लिफ्ट इसी दुर्ग में लगाई थी।
- **जूनागढ़ दुर्ग के सम्बन्ध में दीनानाथ दुबे की उक्ति** – **'दीवारों के भी कान होते है पर जूनागढ़ के महलों की दीवारें तो बोलती हैं।'**
- यह दुर्ग वास्तव में आगरा के दुर्ग से मिलता-जुलता है।

मेहरानगढ़ दुर्ग (जोधपुर)

- **निर्माण -**1459 ई. में राव जोधा द्वारा करवाया गया।
- दुर्ग की **नींव करणी माता** (रिद्धि बाई) ने रखी।
- **इस दुर्ग की श्रेणी** – गिरि दुर्ग।
- **अवस्थिति -** पंचेटिया पहाड़ी/चिड़िया टुक पहाड़ी पर स्थित है।
- **उपनाम-** कागमुखीगढ़, मयूरध्वज गढ़, जोधा की ढाणी, सूर्यगढ़, गढ़ चिंतामणि, मारवाड़ का सिरमौर।
- इस दुर्ग की नींव में **राजाराम जी मेघवाल** को जीवित चुना गया।
- **प्रवेश द्वार -**
  (**1**) **जयपोल** – उत्तर-पूर्व में मानसिंह द्वारा **1808** ई. में निर्मित।
  (**2**) **फतेहपोल** – दक्षिण-पश्चिम में अजीतसिंह द्वारा **1707** ई. में निर्मित।
  (3) **अन्य प्रवेश द्वार** - ध्रुव पोल, सुरज पोल, इमरत पोल तथा भैरों पोल।
- **मेहरानगढ़ की मुख्य तोपें -** किलकिला, गजनी, शम्भूबाण, गजक, गुब्बार जनजमा, कड़क, बिजली आदि।
- मेहरानगढ़ दुर्ग में पेयजल स्रोतों में **रानीसर तथा पदमसर** तालाब है।

प्रमुख दर्शनीय स्थल-:

प्रमुख महल- दुर्ग के भीतर फ़तेह महल, फूल महल, शृंगार चंवरी महल, मोती महल स्थित हैं। इनमें फूल महल (अभयसिंह द्वारा निर्मित) मेहरानगढ़ का सबसे आकर्षक महल है।

मंदिर:

(1) **चामुण्डा माता का मंदिर-** मेहरानगढ़ दुर्ग में राठौड़ राजवंश की आराध्य देवी **चामुण्डा माता का मंदिर** है, जिसका निर्माण **राव जोधा** द्वारा करवाया गया। 2008 **वर्ष में चामुण्डा मंदिर में भगदड़ मच जाने से कई लोग मारे गये इसकी जाँच हेतु जसराज चोपड़ा कमेटी का गठन किया गया।**
(2) **मुरली मनोहर मंदिर**
(3) **आनंदघनजी मंदिर**
(4) **राठौड़ों की कुलदेवी नागणेची जी का मंदिर**

राजस्थान का भूगोल

राजस्थान का परिचय

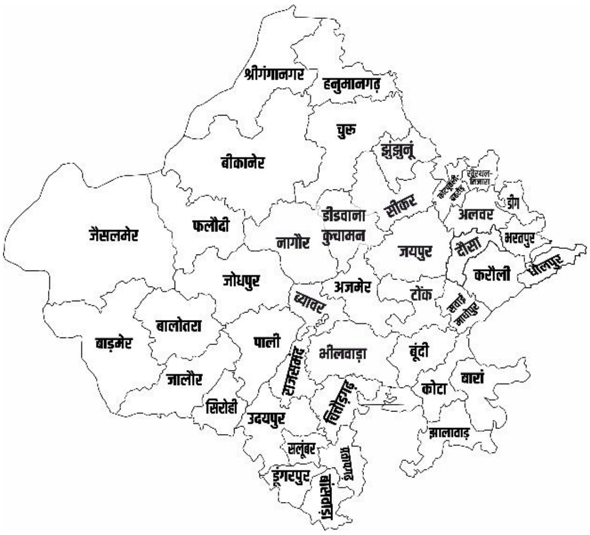

- राजस्थान क्षेत्रफल के हिसाब से भारत का सबसे बड़ा राज्य है और यह देश के उत्तर–पश्चिम में स्थित है। इसका कुल क्षेत्रफल 3,42,239 वर्ग किलोमीटर है, (1,32,139 वर्ग मील) जो भारत के कुल क्षेत्रफल का 10.41% या 1/10वाँ भाग या दसवां हिस्सा है।
- विश्व के कुल क्षेत्रफल में राजस्थान का योगदान 0.25% है।
- (1 नवम्बर, 2000 को मध्य प्रदेश से छत्तीसगढ़ राज्य के अलग होने से राजस्थान क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य बना।)
- क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत के पाँच बड़े राज्य क्रमशः राजस्थान, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश और आन्ध्र प्रदेश है।
- क्षेत्रफल की दृष्टि राजस्थान श्रीलंका से पाँच गुना, चेकोस्लोवाकिया से तीन गुना, इजराइल से सत्रह गुना, ब्रिटेन से (1.5 /2 गुना) है।
- जापान, कांगो रिपब्लिक, फिनलैंड और जर्मनी के क्षेत्रफल राजस्थान के क्षेत्रफल लगभग बराबर है।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान के तीन बड़े जिले –
  1. जैसलमेर 2. बीकानेर
  3. बाड़मेर

राजस्थान की स्थिति, विस्तार एवं आकृति

राजस्थान की ग्लोबीय स्थिति

अक्षांशीय स्थिति
अक्षांशीय दृष्टि से राजस्थान उत्तरी गोलार्द्ध में स्थित है।)

देशांतरीय स्थिति
देशांतरीय दृष्टि से राजस्थान पूर्वी गोलार्द्ध में स्थित है।)

- ग्लोब या विश्व के मानचित्र में राजस्थान की स्थिति उत्तर–पूर्व (ईशान कोण) में है।
- राजस्थान की आकृति विषम चतुष्कोणीय चतुर्भुजाकार या पतंगाकार है।
- इस आकृति के बारे में सर्वप्रथम 'टी.एच. हेंडले' ने बताया।

राजस्थान का अक्षांशीय एवं देशांतरीय विस्तार:–

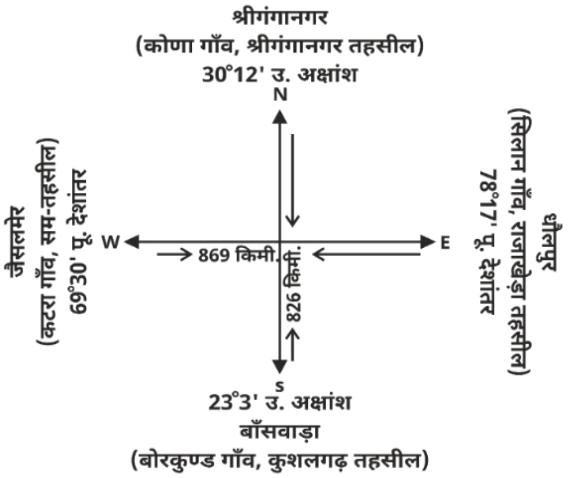

राजस्थान का अक्षांशीय विस्तार:–

- राजस्थान का अक्षांशीय विस्तार 23°03′ उत्तरी अक्षांश से 30°12′ उत्तरी अक्षांश तक है।
- राजस्थान का अक्षांशीय विस्तार 7°9′ अक्षांशों के मध्य है।
- राजस्थान की उत्तर से दक्षिण लम्बाई 826 किलोमीटर है।
- राजस्थान का उत्तरतम बिन्दु कोणा गाँव (श्रीगंगानगर) है।
- राजस्थान का दक्षिणतम बिन्दु बोरकुण्ड (बाँसवाड़ा) है।

राजस्थान का देशांतरीय विस्तार:–

- राजस्थान का देशान्तरीय विस्तार 69°30′ पूर्वी देशांतर से 78°17′ पूर्वी देशांतर तक है।
- राजस्थान का देशांतरीय विस्तार 8°47′ देशांतरों के मध्य है।
- राजस्थान की पूर्व से पश्चिम चौड़ाई 869 किलोमीटर है।
- राजस्थान का पूर्वी बिन्दु सिलाना गाँव (धौलपुर) है।
- राजस्थान का पश्चिमी बिन्दु कटरा गाँव (जैसलमेर) है।
- कर्क रेखा उत्तरी अक्षांश, जिसे कर्क रेखा भी कहते है, यह राजस्थान के दक्षिणी भाग से निकलती है।
- कर्क रेखा भारत के आठ राज्यों गुजरात, राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, पश्चिम बंगाल, त्रिपुरा व मिजोरम से होकर गुजरती है।

राजस्थान का विस्तार:–

स्थलीय सीमा–

- राजस्थान की कुल स्थलीय सीमा 5,920 किलोमीटर है, जिसमें से 1,070 किलोमीटर अन्तर्राष्ट्रीय सीमा तथा 4,850 किलोमीटर अन्तर्राज्यीय सीमा है।

अन्तर्राष्ट्रीय सीमा–

- राजस्थान की अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पाकिस्तान के साथ लगती है, जिसका नाम 'रेडक्लिफ रेखा' है।

रेडक्लिफ रेखा

- रेडक्लिफ रेखा एक कृत्रिम रेखा है।
- रेडक्लिफ रेखा भारत और पाकिस्तान के बीच निर्धारित की गई है।
- रेडक्लिफ लाइन का निर्धारण 17 अगस्त, 1947 को हुआ था।

- रेडक्लिफ रेखा पर भारत के 3 राज्य और 2 केन्द्र शासित प्रदेश स्थित हैं–

तीन राज्य–

1. पंजाब 2. राजस्थान
3. गुजरात

दो केन्द्र शासित प्रदेश–

1. जम्मू–कश्मीर 2. लद्दाख

- रेडक्लिफ लाइन की कुल लम्बाई 3,323 किलोमीटर है, जिसमें से राजस्थान के साथ 1,070 किलोमीटर की सीमा लगती है।
- इस अन्तर्राष्ट्रीय रेखा का नामकरण ब्रिटिश 'वकील सिरिल रेडक्लिफ' के नाम पर किया गया था।
- अन्तर्राष्ट्रीय रेखा की शुरुआत श्रीगंगानगर जिले के हिन्दूमल कोट से शुरू होकर बाड़मेर जिले के भागल गाँव (बाखासर) तक है। राजस्थान के 6 जिले अन्तर्राष्ट्रीय रेखा पर स्थित हैं जो कि निम्नलिखित हैं–

1.	श्रीगंगानगर	210 किलोमीटर
2.	बीकानेर	168 किलोमीटर
3.	जैसलमेर	464 किलोमीटर
4.	बाड़मेर	228 किलोमीटर
5	फलोदी	-

- अन्तर्राष्ट्रीय–सीमा पर स्थित जिलों के अतिरिक्त सबसे नजदीक जिला–मुख्यालय श्रीगंगानगर तथा सबसे दूर धौलपुर है।
- रेडक्लिफ पर पाकिस्तान के 9 जिले स्थित हैं– पंजाब प्रान्त के 3 जिले बहावलनगर, बहावलपुर, रहीमयार खां जिले तथा सिंध प्रांत के 6 जिले घोटकी, सुक्कुर, खैरपुर, संघर, उमरकोट व थारपारकर राजस्थान के साथ अन्तर्राष्ट्रीय सीमा बनाते हैं।

अन्तर्राज्यीय–सीमा–

- राजस्थान राज्य की स्थलीय सीमा पाँच राज्यों के साथ लगती है।
- यह अन्तर्राज्यीय सीमा 4,850 किलोमीटर है।
- राजस्थान के उत्तर में पंजाब राज्य है।
- राजस्थान के उत्तर–पूर्व में हरियाणा राज्य है।
- राजस्थान के पूर्व में उत्तर प्रदेश राज्य है।
- राजस्थान के दक्षिण–पूर्व में मध्य प्रदेश राज्य है।
- राजस्थान के दक्षिण–पश्चिम में गुजरात राज्य है।

पंजाब राज्य–

- यह राजस्थान के साथ न्यूनतम सीमा 89 किलोमीटर बनाता है।
- पंजाब राज्य की सीमा पर स्थित राजस्थान के दो जिले हैं।
- श्रीगंगानगर पंजाब के साथ सर्वाधिक व हनुमानगढ़ न्यूनतम सीमा बनाता है।

हरियाणा राज्य–

- हरियाणा राज्य राजस्थान के साथ 1,262 किलोमीटर की सीमा बनाता है। हरियाणा के साथ राजस्थान के हनुमानगढ़, चूरू, झुंझुनूँ, सीकर, कोटपूतली - बहरोड, खैरथल – तिजारा, डीग, अलवर जिले सीमा बनाते हैं।

उत्तर प्रदेश राज्य–

- उत्तर प्रदेश राज्य राजस्थान के साथ 877 किलोमीटर की सीमा बनाता है।
- उत्तर प्रदेश के साथ राजस्थान के 3 जिले सीमा बनाते हैं–
  1. भरतपुर 2. धौलपुर 3. डीग
- उत्तर प्रदेश के दो जिलों की सीमाएँ राजस्थान के साथ लगती हैं– 1. मथुरा 2. आगरा

मध्य प्रदेश राज्य–

- मध्य प्रदेश राज्य राजस्थान के साथ 1,600 किलोमीटर की सीमा बनाता है।
- **राजस्थान के 10 जिले मध्य प्रदेश के साथ सीमा बनाते हैं–**
  1. धौलपुर 2. करौली
  3. सवाई माधोपुर 4. कोटा
  5. बाराँ 6. झालावाड़
  7. चित्तौड़गढ़ 8. भीलवाड़ा
  9. प्रतापगढ़ 10. बाँसवाड़ा।
- कोटा मध्य प्रदेश के साथ में दो बार सीमा बनाता है।

गुजरात राज्य–

- गुजरात राज्य राजस्थान के साथ 1,022 किलोमीटर की सीमा बनाता है।
- गुजरात के साथ राजस्थान के बाँसवाड़ा, डूँगरपुर, उदयपुर, जालोर, सिरोही, बाड़मेर जिले सीमा बनाते हैं।
- राज्य के सर्वाधिक निकट स्थित बंदरगाह कांडला बंदरगाह (गुजरात) है।
- राजस्थान के चार ऐसे जिले हैं जो दो–दो राज्यों के साथ सीमा बनाते हैं–
  1. हनुमानगढ़ – पंजाब व हरियाणा।
  2. डीग – हरियाणा व उत्तर प्रदेश।
  3. धौलपुर – उत्तर प्रदेश व मध्य प्रदेश।
  4. बाँसवाड़ा – मध्य प्रदेश व गुजरात।
- राजस्थान के 2 जिले अन्तर्राज्यीय व अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर स्थित हैं–
  1. श्रीगंगानगर – पाकिस्तान व पंजाब।
  2. बाड़मेर – पाकिस्तान व गुजरात।
- कोटा एवं चित्तौड़गढ़ राजस्थान के वे जिले है जो एक ही राज्य के साथ 2 बार सीमा बनाते है।

वर्तमान में राजस्थान में 7 संभाग हैं -

1. जयपुर संभाग 2. जोधपुर संभाग
3. बीकानेर संभाग 4. कोटा संभाग
5. अजमेर संभाग 6. उदयपुर संभाग
7. भरतपुर संभाग

राजस्थान के जिले

- वर्तमान में राजस्थान में 41 जिले हैं।
- राजस्थान के माननीय मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने नये जिलों की घोषणा की है जिससे राजस्थान में जिलों की संख्या 41 हो गयी है।
- एकीकरण के समय सबसे अन्त में सम्मिलित होने वाला जिला अजमेर था, जिसे 26 वें जिले के रूप में मान्यता मिली।
- 27 वाँ जिला धौलपुर 15 अप्रैल, 1982 को बना।
- 28 वाँ जिला बाराँ 10 अप्रैल, 1991 को बना।
- 29 वाँ जिला दौसा 10 अप्रैल, 1991 को बना।

भारत का इतिहास

01 सिंधु घाटी सभ्यता

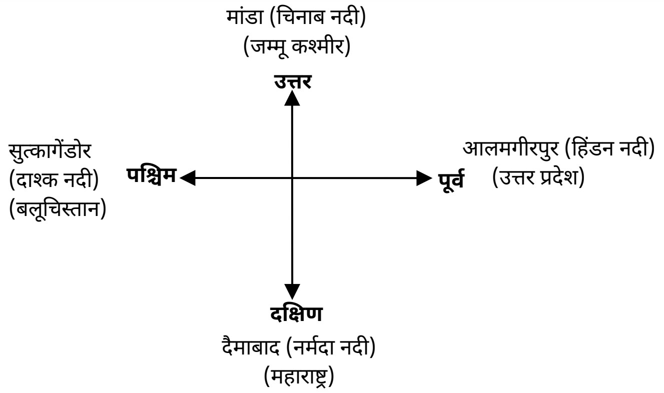

सैंधव सभ्यता की खोज-

- 1842 ई. में प्रकाशित अपने एक लेख में चार्ल्स मैसन ने भारत में एक प्राचीनतम नगर हड़प्पा के नीचे पुरानी सभ्यता दबी होने की बात कही।
- 1851-53 ई. में अलेक्जेण्डर कनिंघम ने हड़प्पा के टीले का सर्वेक्षण किया। 1856 ई. में पहली बार ए. कनिंघम ने हड़प्पा का मानचित्र जारी किया था।
- 1856 ई. में जॉन बर्टन व विलियम बर्टन ने हड़प्पा के टीले से प्राप्त ईंटों का प्रयोग लाहौर से कराची रेलवे लाईन बिछाने में किया।
- 1861 ई. में कनिंघम ने भारतीय पुरात्तत्व विभाग की स्थापना की। वर्ष 1904 में भारत के वायसराय लॉर्ड कर्जन ने भारतीय पुरात्त्व एवं सर्वेक्षण विभाग के अधीन भारत में प्राचीन इमारतों व नगरों के संरक्षण व सर्वेक्षण का आदेश पारित किया।
- इसी के शासनकाल में जॉन मार्शल नए निदेशक के रूप में भारत आए। वर्ष 1921 में जॉन मार्शल के निर्देशन में रायबहादुर दयाराम साहनी ने हड़प्पा के टीले की खोज की।
- वर्ष 1922 में राखालदास बनर्जी ने मोहनजोदड़ो की खोज की।

सैंधव सभ्यता का काल निर्धारण

- हड़प्पा सभ्यता के काल निर्धारण के संबंध में विद्वान एकमत नहीं है।
  1. जॉन मार्शल के अनुसार 3250 - 2750 ई.पू.
  2. अर्नेस्ट मैके के अनुसार 2800 - 2500 ई.पू.
  3. माधोस्वरूप वत्स के अनुसार 3500 - 2700 ई.पू.
  4. मार्टीमर ह्वीलर के अनुसार 2500 - 1500 ई.पू.
  5. डी.पी. अग्रवाल व रोमिला थापर के अनुसार 2300 - 1750 ई.पू.
- रेडियो कार्बन (C-14) तिथि के अनुसार हड़प्पा सभ्यता का सर्वमान्य काल 2300-1750 ई. पू. को माना जाता है।

सैंधव सभ्यता का विस्तार एवं क्षेत्र –

- सैंधव सभ्यता का विस्तार उत्तर में मांडा (जम्मू) से लेकर दक्षिण में नर्मदा नदी तक तथा पश्चिम में सुत्कागेंडोर से लेकर पूर्व में आलमगीरपुर (मेरठ) तक है।
- वह उत्तर से दक्षिण लगभग 1400 किमी. तक तथा पूर्व से पश्चिम लगभग 1600 किमी. तक फैली हुई थी। अभी तक उत्खनन तथा अनुसंधान द्वारा करीब 2800 स्थल ज्ञात किये गए हैं।
- हड़प्पा सभ्यता के अंतर्गत पंजाब, सिंध, बलूचिस्तान, अफगानिस्तान, गुजरात, राजस्थान, महाराष्ट्र, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के भाग आते हैं।

हड़प्पा सभ्यता के प्रमुख स्थल-

स्थल	नदी/सागर तट	खोजकर्ता
हड़प्पा	रावी नदी	दयाराम साहनी
मोहनजोदड़ो	सिंधु नदी	राखालदास बनर्जी
लोथल	भोगवा नदी	एस. आर. राव
कालीबंगा	घग्घर नदी	अमलानन्द घोष
रोपड़	सतलज नदी	यज्ञदत्त शर्मा
कोटदीजी	सिंधु नदी	फजल अहमद खां
चन्हुदड़ो	सिंधु नदी	एन. जी. मजूमदार
आलमगीरपुर	हिन्डन नदी	यज्ञदत्त शर्मा
सुत्कागेंडोर	दाश्क नदी	ऑरेल स्टाइन
बनवाली	सरस्वती नदी	रवीन्द्र सिंह बिस्ट

सैंधव सभ्यता का आकार एवं नामकरण –

- सैंधव सभ्यता का वास्तविक स्वरूप त्रिभुजाकार था, परंतु वर्तमान में नवीन स्थल प्रकाश में आने के कारण अब इस का आकार विषमकोणिय चतुर्भुजाकार है। जॉन मार्शल 'सिंधु सभ्यता' नाम का प्रयोग करने वाले पहले पुरातत्वविद् थे।
- सिंधु सभ्यता के विकास करने वाली जाति में सर्वाधिक मान्य मत है कि यहाँ की बहुसंख्यक जनता भूमध्यसागरीय प्रजाति की थी।

सैंधव सभ्यता की नगर योजना एवं विशेषताएँ –

- सिंधु या हड़प्पा सभ्यता को कांस्ययुगीन सभ्यता माना जाता है।
- सिंधु सभ्यता को प्रथम नगरीय सभ्यता भी माना जाता है।
- सिंधु घाटी सभ्यता की सबसे प्रमुख विशेषता अद्भुत नगर नियोजन व्यवस्था तथा जल निकासी प्रणाली है।
- सिंधु घाटी सभ्यता के अधिकतर नगर दो भागों में विभाजित थे- पूर्वी और पश्चिमी भाग।
- पूर्वी टीले पर आवासीय क्षेत्र मिले हैं, जिन्हें निचला शहर और पश्चिमी टीले पर दुर्ग के साक्ष्य मिले हैं।
- दुर्ग में शासक वर्ग निवास करता था तथा दुर्ग चारों ओर से दीवार से घिरा था। इसे निचले शहर से अलग किया गया था।
- दूसरा भाग जिसमें नगर के साक्ष्य मिले हैं यहाँ सामान्य नागरिक, व्यापारी, शिल्पकार, कारीगर, श्रमिक वर्ग निवास करते थे। निचला शहर भी दीवार से घिरा था। नगर योजना ग्रिड पद्धति पर आधारित है। मुख्य सड़कें उत्तर से दक्षिण की ओर जाति है तथा सड़कें एक-दूसरे को समकोण पर काटती थी।
- सड़कों के किनारे सुव्यवस्थित नालियाँ बनी थी। यह नालियाँ ऊपर से ढकी हुई होती थी। इनमें घरों से निकलने वाला गंदा पानी छोटी नालियों से होते हुए मुख्य सड़क पर बड़े नाले में मिल जाता था।
- हड़प्पा व मोहनजोदड़ो की नगर योजना लगभग समान थी। यहाँ पक्की हुई ईंटों का प्रयोग होता था।

- हड़प्पा सभ्यता के भवन पक्की ईंटों से बने होते थे। हालांकि कालीबंगा व रंगपुर में कच्ची ईटों का प्रयोग हुआ है। सभी जगहों की ईटों का अनुपात 4:2:1 होता था।
- प्रत्येक मकान में रसोईघर, स्नानागार, कुएँ एवं गंदे जल की निकासी के लिए नालियों का प्रबंध था।
- मकानों के दरवाजे मुख्य सड़क की ओर ना खुलकर पीछे की ओर गली में खुलते थे। मकानों के दरवाजे मध्य में न होकर एक किनारे पर होते थे। हड़प्पा सभ्यता की सबसे बड़ी ईंट मोहनजोदड़ों से मिली है।
- ज्यादातर हड़प्पा नगर नदियों के किनारे स्थित थे।

सैंधव सभ्यता के प्रमुख स्थल -

हड़प्पा –

- हड़प्पा स्थल की खोज वर्ष 1921 में दयाराम साहनी द्वारा की गई थी। यह स्थल वर्तमान में पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में स्थित है, जो तत्कालीन मोंटगोमरी जिले (अब शाहीवाल) का हिस्सा था।
- हड़प्पा नगर रावी नदी के बाएँ तट पर स्थित है।
- वर्ष 1923-25 में दयाराम साहनी के निर्देशन में इस स्थल का उत्खनन कार्य किया गया। इसके उत्खनन में माधो स्वरूप वत्स (1926) और व्हीलर (1946) भी जुड़े हुए थे।

हड़प्पा से प्राप्त अवशेष -

1. स्त्री के गर्भ से निकलते हुए एक पौधे की मृणमूर्ति (इसे हड़प्पा वासियों ने उर्वरा देवी या पृथ्वी देवी माना गया है।)
2. बिना धड़ की एक पाषाण मूर्ति
3. कब्रिस्तान R-37
4. विशाल अन्नागार
5. काँसे का दर्पण
6. अलंकृत मोहरें
7. मानव के साथ बकरे के शवाधान के साक्ष्य
8. प्रसाधन मंजूषा (श्रृंगार पेटी)

- **नोट**- सर्वाधिक अलंकृत मोहरें हड़प्पा से, जबकि सर्वाधिक मोहरें मोहनजोदड़ो से प्राप्त हुई हैं।
- सैंधव सभ्यता की मोहरें सेलखड़ी (स्टेटाइड) से निर्मित होती थी।
- ये मुहरें 3 प्रकार की होती थी- आयताकार, वृत्ताकार और वर्गाकार (सर्वाधिक)।
- इन मोहरों पर एक श्रृंगी बैल या हिरण, कूबड़दार बैल, मातृदेवी, व्याघ्र, पशुपतिनाथ व भैंसा आदि का अंकन मिलता है।

मोहनजोदड़ो –

- वर्तमान समय में मोहनजोदड़ो पाकिस्तान के सिंध प्रांत के लरकाना जिले में सिंधु नदी के दाएँ किनारे पर स्थित प्रमुख नगर था।
- यह सैंधव सभ्यता का सबसे बड़ा और प्रमुख नगर था।
- इस स्थल की खोज सर्वप्रथम वर्ष 1922 में राखालदास बनर्जी द्वारा की गई थी।
- मोहनजोदड़ो का शाब्दिक अर्थ 'मृतकों का टीला' है।
- इसे सिंध का नखलिस्तान भी कहा जाता है।
- यह नगर 8 बार उजड़कर 9 बार बसा था, जिसके 7 क्रमिक स्तर मिले हैं।

मोहनजोदड़ों से प्राप्त अवशेष -

1. विशाल स्नानागार - सबसे बड़ा सार्वजनिक स्थल 'विशाल स्नानागार' था, इस स्नानागार का धार्मिक महत्त्व था। इसके चारों ओर जल भण्डारण हेतु बड़े-बड़े टैंक मिले हैं।
   - इसे जॉन मार्शल ने 'तत्कालीन विश्व का आश्चर्यजनक निर्माण' कहा और 'विराट वस्तु' की संज्ञा दी।
2. विशाल अन्नागार– यह मोहनजोदड़ो की सबसे बड़ी इमारत अन्नागार थी।
3. पशुपतिनाथ शिव की मूर्ति
4. काँसे की नर्तकी की मूर्ति
5. तीन मुख वाले एक देवता के अंकन वाली मोहर - इसके चारों तरफ भैंसा, हाथी, गेंडा, व्याघ्र व नीचले भाग पर 2 हिरण व ऊपरी भाग पर मछली व 10 अक्षरों का अंकन मिलता है।
   - जॉन मार्शल ने इसे 'आद्यतम शिव' की उपाधि प्रदान की।
6. सर्वाधिक मोहरें
7. मानव कंकाल के साक्ष्य

लोथल -

- गुजरात के अहमदाबाद में भोगवा नदी के समीप स्थित लोथल, हड़प्पाकालीन सभ्यता का एक महत्त्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र था।
- इस स्थल की खोज वर्ष 1954 में एस. आर. राव द्वारा की गई थी।
- वर्ष 1955-62 में उनके निर्देशन में उत्खनन कार्य किया गया।
- यह एक औद्योगिक नगर था ।
- एस.आर. राव ने इसे 'लघु हड़प्पा/लघु मोहनजोदड़ो' कहा है।
- यह पूरा नगर ही दीवारों से घिरा था। यहाँ के निवासी चावल भी उगाते थे। यह सिन्धु सभ्यता का एक प्रमुख गोदीबाड़ा (डॉक यार्ड) बंदरगाह/पत्तन था। 4 नाव के साक्ष्य से द. पूर्वी एशियाई देशों के साथ व्यापार का पता चलता है।
- सम्पूर्ण सैन्धव सभ्यता का सबसे बड़ा सार्वजनिक स्थल- लोथल का गोदीबाड़ा था। यहाँ से बंदरगाह के प्रमाण प्राप्त हुए हैं। लोथल उस समय पश्चिमी एशिया से व्यापार का प्रमुख स्थल था।

लोथल से प्राप्त अवशेष -

1. विशाल गोदीबाड़ा (डॉक यार्ड)
2. मनके बनाने का कारखाने के साक्ष्य
3. माप-बाट-माप-तौल के लिए पैमाना/हाथी दाँत पैमाना
4. खोपड़ी की शल्य चिकित्सा के साक्ष्य
5. तीन युगल शवाधान (एक साथ दफनाए शव) - जिनका सिर उत्तर दिशा की तरफ तथा पैर दक्षिण दिशा की तरफ है।
6. अग्निकुंड/अग्निवेदिकाएँ
7. फ़ारस की मोहरें

कालीबंगा –

- कालीबंगा का शाब्दिक अर्थ 'काले रंग की चूड़ियाँ' होता है।
- कालीबंगा से हड़प्पा सभ्यता के साथ-साथ हड़प्पा पूर्व सभ्यता के अवशेष भी प्राप्त हुए हैं। कालीबंगा राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले में घग्घर नदी के किनारे स्थित है।
- इसकी खोज वर्ष 1953 में अमलानंद घोष द्वारा की गई थी।
- वर्ष 1961-69 में बी. बी. लाल एवं बी. के. थापर द्वारा इस स्थल उत्खनन कार्य किया गया। डॉ. दशरथ शर्मा ने कालीबंगा को 'हड़प्पा संस्कृति की तीसरी राजधानी' कहा।
- कालीबंगा को 'दीन-हीन की बस्ती' कहा गया।

भारतीय संविधान एवं राजव्यवस्था

संविधान की मांग

- संविधान निर्माण की सर्वप्रथम माँग बाल गंगाधर तिलक द्वारा 1895 ई. में "स्वराज विधेयक" द्वारा की गई।
- वर्ष 1916 में होमरूल लीग आन्दोलन चलाया गया, जिसके माध्यम से अंग्रेजों से घरेलू शासन संचालन की माँग की गई।
- वर्ष 1922 में गाँधीजी ने प्रबलतम तरीके से संविधान सभा और संविधान निर्माण की माँग की।
- **नेहरू रिपोर्ट -** अगस्त, 1928 में पं. मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में नेहरू रिपोर्ट (बम्बई) बनाई गई। नेहरू रिपोर्ट में ब्रिटिश भारत का पहला लिखित संविधान बनाया गया। नेहरू रिपोर्ट में मौलिक अधिकारों, अल्पसंख्यकों के अधिकारों तथा अखिल भारतीय संघ एवम् डोमिनियन स्टेट के प्रावधान रखे गए। नेहरू रिपोर्ट का मुस्लिम लीग और रियासतों के राजाओं द्वारा विरोध किया गया।
- वर्ष 1929 में जवाहर लाल नेहरू की अध्यक्षता में कांग्रेस का लाहौर अधिवेशन हुआ, जिसमें पूर्ण स्वराज्य की माँग की गई।
- वर्ष 1934 में मानवेन्द्रनाथ रॉय ने व्यक्तिगत रूप से संविधान सभा के गठन की माँग की।
- वर्ष 1936 में कांग्रेस का फैजपुर अधिवेशन आयोजित किया गया जिसमें कांग्रेस के मंच से पहली बार चुनी हुई संविधान सभा द्वारा संविधान निर्माण की माँग की गई।
- **अगस्त प्रस्ताव -** 1940 में सैद्धांतिक रूप से ब्रिटिश सरकार के द्वारा संविधान सभा की माँग स्वीकार की गई और 'अगस्त प्रस्ताव' भारत भेजा गया। लेकिन कांग्रेस एवं मुस्लिम लीग ने इसे अस्वीकार कर दिया।
- **क्रिप्स मिशन -** मार्च, 1942 में दूसरे विश्व युद्ध से उपजी परिस्थितियों के उपरान्त क्रिप्स मिशन भारत भेजा गया। क्रिप्स मिशन ने युद्ध के बाद भारत में उत्तरदायी शासन की माँग को मानने का वचन दिया, लेकिन यहाँ भी 'डोमिनियन स्टेट' अवधारणा रखी गई। इसे कांग्रेस, लीग और गाँधीजी ने नामंजूर कर दिया।
- **शिमला सम्मेलन/वेवेल योजना -** भारत में शासन की अव्यवस्था को देखते हुए तत्कालीन वायसराय लॉर्ड वेवेल ने जून, 1945 में शिमला में सर्वदलीय बैठक बुलायी जो किसी भी तार्किक नतीजे पर नहीं पहुँची। इस सम्मेलन को 'शिमला सम्मेलन' या वेवेल योजना के नाम से जाना जाता है।
- **कैबिनेट मिशन -** अंततः ब्रिटिश सरकार द्वारा मार्च, 1946 में कैबिनेट मिशन भारत भेजा गया, जिसकी अध्यक्षता 'सर पैथिक लॉरेन्स' ने की तथा दो अन्य सदस्य सर स्टेफॉर्ड क्रिप्स और ए. वी. अलेक्जेण्डर थे।

कैबिनेट मिशन योजना के अनुसार संविधान सभा का गठन

- कैबिनेट मिशन के अनुसार संविधान सभा का गठन अंशत: निर्वाचित एवं अंशत: नामित सदस्यों से होना था।
- सदस्यों का निर्वाचन अप्रत्यक्ष रूप से प्रांतों की विधायिका से होना था।
- संविधान सभा की कुल सदस्य संख्या 389 निश्चित की गई, इसमें से- 296 सदस्य ब्रिटिश भारत से जिसमें 292 ब्रिटिश प्रांतों से व 4 चीफ कमिश्नरी [अजमेर-मेरवाड़ा, दिल्ली, कुर्ग (कर्नाटक) एवं बलूचिस्तान] एवं 93 सदस्य देशी रियासतों से होंगे।
- ब्रिटिश प्रांतों से निर्वाचन हेतु निर्वाचन क्षेत्र 3 भागों में मुस्लिम, सिख और सामान्य के अंतर्गत विभाजित किए गए।
- प्रत्येक समुदाय से चुनाव के लिए आनुपातिक प्रतिनिधित्व प्रणाली एवं एकल संक्रमणीय मत पद्धति का चयन किया गया।
- सीटों का बंटवारा जनसंख्या के आधार पर किया गया। औसतन 10 लाख की जनसंख्या पर एक सीट का निर्धारण किया गया।
- देशी रियासतों के प्रतिनिधि इनके प्रमुख द्वारा नामित किये जाने थे।

संविधान सभा का गठन

- कैबिनेट मिशन योजना के अनुसार जुलाई-अगस्त, 1946 में संविधान सभा के 296 सीटों पर चुनाव हुए जिनमें से 208 सीटों पर कांग्रेस, 73 सीटों पर मुस्लिम लीग एवं 15 सीटों अन्य सदस्यों ने प्राप्त की।
- देशी रियासतों को आवंटित 93 सीटें रिक्त ही रही, क्योंकि देशी रियासतों ने खुद को संविधान सभा से अलग रखने का निर्णय किया।
- नवम्बर, 1946 को वायसराय ने संविधान सभा के गठन की घोषणा की।

संविधान सभा की कार्यवाही

- 9 दिसम्बर, 1946 को संविधान सभा की पहली बैठक हुई। मुस्लिम लीग ने बहिष्कार किया।
- प्रथम बैठक में कुल 207 सदस्य उपस्थित हुए जिनमें 10 महिलाएं शामिल थी।
- प्रथम बैठक में ही आचार्य कृपलानी के प्रस्ताव पर डॉ. सच्चिदानंद सिन्हा को संविधान सभा का अस्थायी अध्यक्ष नियुक्त किया गया।
- 11 दिसम्बर, 1946 को डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को सर्वसम्मति से संविधान सभा का स्थायी अध्यक्ष चुना गया।
- संविधान सभा के उपाध्यक्ष एस.सी. मुखर्जी (ब्रिटिश भारत के) एवं वी.टी. कृष्णमाचारी (देशी रियासतों के) को बनाया गया।
- संविधान सभा के संवैधानिक सलाहकार बी.एन. राव एवं सचिव एच.वी.आर. आयंगर बनाए गए।

दल	सीटें
भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस	208
मुस्लिम लीग	73
अनुसूचित जाति फेडरेशन	1
कृषक प्रजा पार्टी	1
यूनियनिस्ट पार्टी	1
यूनियनिस्ट अनुसूचित जाति	1
यूनियनिस्ट मुस्लिम	1
कम्युनिस्ट पार्टी	1
गैर-कांग्रेसी सिख	1
स्वतंत्र	8

कुल	296
समुदाय	**सीटें**
हिन्दू	163
मुस्लिम	80
अनुसूचित जाति	31
पिछड़ी जनजातियाँ	6
भारतीय ईसाई	6
सिख	4
एंग्लो-इंडियन	3
पारसी	3
कुल	**296**

विभाजन के पश्चात् संविधान सभा के सीटों की स्थिति-

प्रांत	सीटें
भारतीय प्रांत	229
देशी रियासतें	70
कुल	**299**

उद्देश्य प्रस्ताव (Objective Resolution)

- 13 दिसंबर, 1946 को पंडित जवाहर लाल नेहरू के द्वारा संविधान सभा में उद्देश्य प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया।
- संविधान सभा के द्वारा 22 जनवरी, 1947 को उद्देश्य प्रस्ताव को पारित किया गया। उद्देश्य प्रस्ताव में उल्लेख था कि भारत एक स्वतंत्र एवं संप्रभु गणराज्य है।
- संप्रभु एवं स्वतंत्र भारत तथा इसके संविधान की समस्त शक्तियाँ सत्ता का स्रोत भारत की जनता है।
- भारत के सभी नागरिकों के लिए सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक न्याय, प्रतिष्ठा एवं अवसर एवं कानून के समक्ष समता तथा कानून और सार्वजनिक नैतिकता की सीमाओं में रहते हुए वाक्, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म, उपासना, व्यवसाय, संगठन और कार्य करने की मौलिक स्वतंत्रता की गारंटी व सुरक्षा दी जाएगी।

संविधान सभा में 15 महिला सदस्य थी जो निम्न है-

- 1. सरोजिनी नायडू 2. सुचेता कृपलानी
  3. राजकुमारी अमृता कौर 4. विजयलक्ष्मी पंडित
  5. हंसा मेहता 6. दुर्गाबाई देशमुख
  7. रेणुका रे 8. कमला चौधरी
  9. दक्षिणायनी वेलायुदन 10. मालती चौधरी
  11. पूर्णिमा बनर्जी 12. एनी मस्करीन (मनोनीत)
  13. अम्मू स्वामीनाथन 14. लीला रॉय
  15. बेगम एजाज रसूल (मुस्लिम सदस्य)

संविधान सभा की समितियाँ

- संविधान सभा ने संविधान के निर्माण से संबंधित कई समितियों का गठन किया। इनमें से 8 बड़ी समितियाँ थीं तथा अन्य छोटी।

समितियाँ के अध्यक्ष -

- 1. संघ शक्ति समिति - जवाहरलाल नेहरू।
  2. संघीय संविधान समिति - जवाहरलाल नेहरू।
  3. प्रांतीय संविधान समिति - सरदार पटेल।
  4. प्रारूप समिति - डॉ. बी.आर. अम्बेडकर।
  5. मौलिक अधिकारों एवं अल्पसंख्यकों संबंधी परामर्श समिति – सरदार पटेल। इसमें दो उप समितियाँ थी-
  a. मौलिक अधिकार उप समिति - जे.बी. कृपलानी।
  b. अल्पसंख्यक उप समिति – एच.सी. मुखर्जी।
  6. प्रक्रिया नियम समिति - डॉ. राजेन्द्र प्रसाद।
  7. राज्यों के लिये समिति (राज्यों से समझौता करने वाली) - जवाहर लाल नेहरू।
  8. संचालन समिति - डॉ. राजेन्द्र प्रसाद।

छोटी समितियाँ -

- 1. संविधान सभा के कार्यों संबंधी समिति - जी.वी. मावलंकर।
  2. कार्य संचालन समिति - डॉ. के.एम. मुंशी।
  3. सदन समिति - बी. पट्टाभिसीतारमैय्या।
  4. राष्ट्र ध्वज संबंधी तदर्थ समिति - डॉ. राजेन्द्र प्रसाद।
  5. प्रारूप संविधान की जाँच करने वाली समिति – जवाहर लाल नेहरू।
  6. वित्त एवं स्टाफ समिति – डॉ. राजेन्द्र प्रसाद।

प्रारूप समिति (Drafting Committee) -

- इस समिति का गठन 29 अगस्त, 1947 को हुआ था।
- 30 अगस्त, 1947 को प्रारूप समिति की प्रथम बैठक हुई एवं इसी बैठक में डॉ. बी.आर. अंबेडकर को अध्यक्ष बनाया गया।
- इस समिति में सात सदस्य थे-
  1. डॉ. बी.आर. अंबेडकर (अध्यक्ष)
  2. एन. गोपाल स्वामी आयंगर।
  3. अल्लादी कृष्ण स्वामी अय्यर।
  4. डॉ. के.एम. मुंशी।
  5. सैयद मोहम्मद सादुल्ला।
  6. एन. माधव राव (बी.एल. मित्र के त्याग-पत्र के पश्चात्)
  7. टी.टी. कृष्णामाचारी (डी.पी. खेतान की मृत्यु के पश्चात्)

भारतीय संविधान सभा ने दो प्रकार से कार्य किया-

(1) जब संविधान निर्माण का कार्य किया जाता तो इसकी अध्यक्षता राजेन्द्र प्रसाद करते थे।

(2) जब संविधान सभा विधायिका के रूप में कार्य करती है तो अध्यक्षता गणेश वासुदेव मावलंकर द्वारा की जाती थी।

- संविधान पर 284 लोगों ने हस्ताक्षर किए। हस्ताक्षर करने वाला पहले व्यक्ति जवाहर लाल नेहरू थे। राजस्थान से हस्ताक्षर करने वाले पहले व्यक्ति बलवंत सिंह मेहता थे।
- राजस्थान से संविधान सभा में 12 सदस्य भेजे गए थे, जिसमें से 11 सदस्य देशी रियासतों से तथा 1 चीफ कमीश्नरी अजमेर-मेरवाड़ा क्षेत्र से था। डॉ. बी.आर. अंबेडकर ने सभा में 4 नवंबर, 1948 को संविधान का अंतिम प्रारूप पेश किया।
- संविधान के प्रारूप पर पेश इस प्रस्ताव को 26 नवंबर, 1949 को पारित कर दिया गया और इस पर अध्यक्ष व सदस्यों के (284 सदस्य) हस्ताक्षर लिए गए।
- 26 नवम्बर, 1949 को संविधान के 16 अनुच्छेद जिसमें नागरिकता, अन्तरिम संसद तथा संक्रमणकालीन उपबंध लागू किए गए।

भारत का भूगोल

भारत की स्थिति एवं विस्तार

- भारत के उत्तर – पूर्व में हिमालय, दक्षिण पूर्व में बंगाल की खाड़ी, दक्षिण पश्चिम में अरब सागर, दक्षिण में मन्नार की खाड़ी है।
- भारत का कुल क्षेत्रफल 32,87,263 किमी. तथा 1269219.34 वर्ग मील है जो विश्व के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का लगभग 2.42% है।
- भारतीय भू– भाग की लंबाई 3214 किमी. (उत्तर से दक्षिण) और 2933 किमी. (पूर्व से पश्चिम) है। इनके बीच का अन्तर 281 किमी. है।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत विश्व का सातवाँ बड़ा देश है।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से विश्व के बड़े देश – 1. रूस 2. कनाडा 3. चीन 4. संयुक्त राज्य अमेरिका 5. ब्राजील 6. ऑस्ट्रेलिया 7. भारत 8. अर्जेंटीना।

स्थिति–

- भारत का अक्षांशीय विस्तार 8°4′ उत्तरी अक्षांश से 37°6′ उत्तरी अक्षांश के मध्य स्थित है।
- भारत का देशांतरीय विस्तार 68°7′ पूर्वी देशांतर से 97°25′ पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है।
- अक्षांशीय दृष्टि से भारत उत्तरी गोलार्द्ध में स्थित है।
- भारत का दक्षिणतम बिन्दु 6°45′ उत्तरी अक्षांश है तथा यह इंदिरा पॉइंट अण्डमान निकोबार में स्थित है।
- इंदिरा कॉल भारत का उत्तरी बिन्दु गिलगित (जम्मू कश्मीर) में स्थित है।
- कन्याकुमारी/केप केमोरिन भारत का मुख्य भूमि का दक्षिणतम बिन्दु है जो तमिलनाडु में स्थित है।
- कर्क रेखा का दक्षिणी भाग उष्ण कटिबन्ध में तथा उत्तरी भाग उपोष्ण/शीतोष्ण कटिबन्ध में स्थित है।
- भारत का पूर्वी बिन्दु किबिथू वालांगु (त्वांग) है जो अरुणाचल प्रदेश में स्थित है।
- भारत का पश्चिमी बिन्दु गोहरमाता (गौरमाता) है जो कच्छ (गुजरात) में स्थित है।

कर्क रेखा (उत्तरी अक्षांश)-

- कर्क रेखा भारत के 8 राज्यों में से होकर गुजरती है।
- कर्क रेखा गुजरात, राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, पश्चिम बंगाल, त्रिपुरा, मिजोरम से गुजरती है।
- कर्क रेखा की सबसे कम लंबाई राजस्थान में है।
- कर्क रेखा की सबसे अधिक लंबाई मध्य प्रदेश में है।
- कर्क रेखा के नजदीक गांधीनगर, उज्जैन, रांची, भोपाल, अगरतला शहर स्थित है।

मानक समय निर्धारक रेखा–

- भारत की मानक समय निर्धारक रेखा 82°30′ ( ) पूर्वी देशान्तर रेखा को कहा जाता है।
- 82°30′ पूर्वी देशान्तर रेखा नैनी कस्बा (मिर्जापुर), प्रयागराज उत्तर प्रदेश में से गुजरती है।
- 82°30′ पूर्वी देशांतर रेखा उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, ओडिशा एवं आंध्र प्रदेश राज्यों से गुजरती हैं।
- भारतीय मानक समय ग्रीनविच माध्य समय से 5 घंटे 30 मिनट आगे है।

भारत की सीमाएँ –

- **स्थलीय सीमा** – भारत की स्थलीय सीमा की लम्बाई 15,200 किमी. है।
- **तटीय सीमा** – मुख्य भूमि की तटीय सीमा की लम्बाई 6,100 किमी. है। अंडमान–निकोबार तथा लक्षद्वीप समूहों की तट रेखा को भी शामिल किया जाए तो भारत की तटीय सीमा 7516.6 किमी. है।
- भारत की स्थलीय एवं जलीय सीमा को मिलाकर कुल लंबाई 22,716.6 किमी. है।
- सर्वाधिक तटीय सीमा वाले राज्य – गुजरात, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु है।
- न्यूनतम तटीय सीमा वाले राज्य – गोवा, कर्नाटक है।

भारत की जलीय सीमा-

- हिन्द महासागर में भारत की केन्द्रीय स्तिथि है।
- देश की जलीय सीमा को 3 भागों में वर्गीकृत किया गया है–

  (i) प्रादेशिक जल सीमा – आधार रेखा से समुद्र में 12 समुद्री मील तक प्रादेशिक समुद्री सीमा है। समुद्र में प्रादेशिक (12 नॉटिकल) तक भारत का संपूर्ण अधिकार है।

  आधार रेखा टेढ़े–मेढ़े तट को मिलाने वाली काल्पनिक रेखा है जिसके मध्य के सागरीय जल को आन्तरिक जल कहते हैं।

  (ii) संलग्न क्षेत्र – अविच्छिन्न मण्डल या संलग्न क्षेत्र की दूरी आधार रेखा से 24 समुद्री मील (1 समुद्री मील = 1.8 किमी.) तक है। इस क्षेत्र में भारत को साफ सफाई, सीमा शुल्क वसूली और वित्तीय अधिकार प्राप्त है।

  (iii) अनन्य आर्थिक क्षेत्र – यह आधार रेखा से 200 समुद्री मील की दूरी तक विस्तृत है। इसमें भारत को वैज्ञानिक अनुसंधान, नए द्वीपों की खोज व निर्माण तथा वैज्ञानिक संसाधनों के दोहन का अधिकार प्राप्त है।

अंतर्राष्ट्रीय सीमा–

- इस विशाल देश के तीन ओर अरब सागर, बंगाल की खाड़ी और हिन्द महासागर है।
- भारत की मुख्य भूमि के अतिरिक्त बंगाल की खाड़ी में अंडमान तथा निकोबार द्वीप समूह और अरब सागर में लक्षद्वीप समूह स्थित है जो मुख्य भूमि से समुद्र द्वारा अलग है।

रेडक्लिफ सीमा–

- इस सीमा की लंबाई 3323 किमी. है।
- अंग्रेज अधिकारी सर साइरिल रेडक्लिफ द्वारा भारत–पाकिस्तान की सीमा का निर्धारण 1947 में किया गया था। इस सीमा को रेडक्लिफ सीमा कहा जाता है।

मैकमोहन रेखा–

- इस सीमा की लंबाई – 3488 किमी. है।

- सर हेनरी मैकमोहन द्वारा भारत और चीन के बीच एक अंतर्राष्ट्रीय सीमा का निर्धारण 1914 में किया गया, जिसे मैकमोहन रेखा कहा जाता हैं।

डूरण्ड रेखा–

- इस सीमा की लंबाई 106 किमी. है ।
- सर मोर्टिसुर डूरण्ड द्वारा एक भारत तथा अफगानिस्तान के बीच अंतर्राष्ट्रीय सीमा बनाई गई, जिसे डूरण्ड रेखा के नाम से जाना जाता है।
- वर्ष 1947 में पाकिस्तान के बनने के बाद डूरण्ड रेखा पाकिस्तान तथा अफगानिस्तान के बीच एक अंतर्राष्ट्रीय सीमा रेखा बन गई।

भारत–म्यांमार सीमा –

- इस सीमा की लंबाई 1643 किमी. है।
- अराकान योमा पर्वतमाला भारत तथा म्यांमार के बीच सीमा बनाती है।
- भारत – म्यांमार सीमा का निर्धारण पटकोई, नागा, मिसीपी और अराकानयोमा की पहाड़ियों से होता है।
- पूर्वोत्तर राज्य (सात बहनों के नाम से विख्यात राज्य) – अरुणाचल प्रदेश, असम, त्रिपुरा, नागालैण्ड, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम।
- सिक्किम व मेघालय की सीमा केवल एक – एक राज्य से लगती है। सिक्किम की सीमा पश्चिम बंगाल से तथा मेघालय की सीमा असम से लगती है।
- तीन ओर से बांग्लादेश से घिरा हुआ राज्य त्रिपुरा है।
- सिक्किम तीन तरफ से अंतर्राष्ट्रीय सीमा बनाता है।

देश की सीमा पर स्थित राज्य इस प्रकार से है–

1.बांग्लादेश के साथ कुल सीमा 4096.7 किमी. है, इस सीमा पर पश्चिम बंगाल (सर्वाधिक), असम (न्यूनतम), मेघालय, त्रिपुरा और मिजोरम राज्य स्थित है।

2. चीन के साथ कुल सीमा 3488 किमी. है, इस सीमा पर लद्दाख, (सर्वाधिक), हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड, सिक्किम (न्यूनतम), अरुणाचल प्रदेश राज्य स्थित है।

3. पाकिस्तान के साथ कुल सीमा 3323 किमी. है, इस सीमा पर जम्मू और कश्मीर व लद्दाख (सर्वाधिक), पंजाब (न्यूनतम), राजस्थान, गुजरात राज्य स्थित है।

4. अफगानिस्तान के साथ कुल सीमा 106 किमी. है, लद्दाख इस सीमा पर स्थित है।

5. नेपाल के साथ कुल सीमा 1751 किमी. है, उत्तर प्रदेश (सर्वाधिक), प. बंगाल (न्यूनतम), उत्तराखण्ड, बिहार, सिक्किम इस सीमा पर स्थित है।

6. म्यांमार के साथ कुल सीमा 1643 किमी. है, अरुणाचल प्रदेश (सर्वाधिक), नागालैण्ड (न्यूनतम), मणिपुर, मिजोरम इस सीमा पर स्थित है।

7. भूटान के साथ कुल सीमा 699 किमी. है, असम (सर्वाधिक), सिक्किम (न्यूनतम), अरुणाचल प्रदेश, पं. बंगाल इस सीमा पर स्थित है।

भारत की जलीय सीमा–

- **9° चैनल –** मिनिकॉय एवं लक्षद्वीप के मध्य सीमा निर्धारण करता है।
- **10° चैनल –** अण्डमान (लिटिल अण्डमान) एवं निकोबार (कार निकोबार) के मध्य सीमा निर्धारण करता है।
- **6° चैनल (ग्रेट चैनल) –** सुमात्रा (इण्डोनेशिया) तथा ग्रेट निकोबार (अण्डमान निकोबार भारत) के मध्य सीमा निर्धारण करता है।
- **8° चैनल –** मालदीव एवं मिनाकॉय (लक्षद्वीप) के मध्य सीमा निर्धारण करता है।
- **16° उत्तरी अक्षांश रेखा–** यह सह्याद्रि पर्वतमाला को दो बराबर भागों में बाँटती है।
- **24° उत्तरी अक्षांश रेखा** – यहाँ पर भारत व पाकिस्तान के मध्य सरक्रीक सीमा विवाद है।
- **डक्कन पास –** लघु अण्डमान एवं दक्षिण अण्डमान के मध्य सीमा निर्धारण करता है।
- **कोको चैनल –** लैंडफॉल द्वीप (उत्तरी अण्डमान) एवं कोको द्वीप (म्यांमार) के मध्य।

पाक जल संधि –

- यह भारत व श्रीलंका के मध्य स्थित है, जो मन्नार की खाड़ी को बंगाल की खाड़ी से जोड़ती है।
- भारत के तमिलनाडु व श्रीलंका के मध्य आदम ब्रिज स्थित है। आदम ब्रिज की शुरुआत धनुष्कोडी नामक स्थान से होती है। पम्बन द्वीप (रामेश्वरम्) इसी ब्रिज का हिस्सा है, इसे रामसेतु भी कहा जाता है।

मन्नार की खाड़ी–

- (तमिलनाडु)– यह दक्षिण पूर्व तमिलनाडु व श्रीलंका के मध्य स्थित है।

भारत के राज्य व केन्द्रशासित प्रदेश –

- वर्तमान में भारत में 28 राज्य व 8 केन्द्रशासित प्रदेश है।
- जनसंख्या के दृष्टिकोण से उत्तर प्रदेश भारत का सबसे बड़ा राज्य तथा सिक्किम सबसे छोटा राज्य है।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान भारत का सबसे बड़ा राज्य है तथा गोवा सबसे छोटा राज्य है।
- कच्छ (गुजरात) भारत का सबसे बड़ा जिला तथा माहे (पुडुचेरी) भारत का सबसे छोटा जिला है।
- जम्मू कश्मीर, दिल्ली व पुडुचेरी भारत के केवल तीन केन्द्र शासित प्रदेश ऐसे है, जिनमें विधानसभा है।
- उत्तर प्रदेश का सोनभद्र देश का एकमात्र ऐसा जिला है जो चार राज्यों (छत्तीसगढ, मध्य प्रदेश, बिहार, झारखण्ड) की सीमा को स्पर्श करता है।

अभ्यास प्रश्न

1. भारत अवस्थित है-

(a) अक्षांश 8°4' उ. से 37°6' द. तथा देशांतर 68°7' पू. से 97°25' प. के मध्य

(b) अक्षांश 8°4' द. से 37°6' उ. तथा देशांतर 68°7' प. से 97°25' पू. के मध्य

(c) अक्षांश 8°4' उ. से 37°6' उ. तथा देशांतर 68°07' पू. से 97°25' पू. के मध्य

(d) अक्षांश 8°4' द. से 37°6' द. तथा देशांतर 68°7' प. से 97°25' प. के मध्य

विश्व का भूगोल

सामान्य परिचय
- विश्व का **सबसे बड़ा महाद्वीप** (आकार व जनसंख्या दोनों में)।
- **क्षेत्रफल**- 3,16,99,257 वर्ग किमी (विश्व का 30.6%)।
- मुख्यतः **उत्तरी व पूर्वी गोलार्द्ध** में स्थित।
- **प्राचीन सभ्यताओं** का उद्गम स्थल: सुमेरी, भारतीय, चीनी।
- **महत्वपूर्ण अक्षांश रेखाएं**: विषुवत, कर्क रेखा, अंटार्कटिक वृत्त।

भौगोलिक सीमाएं-
- **अफ्रीका से अलग**- स्वेज नहर और लाल सागर द्वारा।
- **उत्तर अमेरिका से अलग**- बैरिंग जलसंधि द्वारा।

भौगोलिक विशेषताएं
- **विश्व की सर्वोच्च चोटी**- माउंट एवरेस्ट (8,848 मी.)
- **सबसे गहरा गर्त**- मेरियाना ट्रेंच (11,034 मी.)
- **सबसे नीचा स्थल**- मृत सागर (397 मी. समुद्र तल से नीचे)।
- **सबसे गहरी झील**- बेकाल झील (1,620 मी.)
- **सबसे लम्बी तटीय रेखा**- 62,800 किमी.
- **सबसे शुष्क स्थान**- अदन (यमन) – 5.6 से.मी. वार्षिक वर्षा।
- **सबसे अधिक वर्षा**- मासिनराम (भारत) – 1,140 से.मी.
- **सभी जलवायु प्रकार एवं जैव विविधता** यहां पाई जाती है।

मुख्य पर्वत एवं पठार
- **पामीर पठार** (7,495 मी.) – तुर्कमेनिस्तान, किर्गिजस्तान, उज़्बेकिस्तान।
- **टिनशान, कुनलुन** (चीन) – पामीर के उत्तर-पूर्व में।
- **काराकोरम, हिमालय, आराकनयोमा** – पामीर के दक्षिण-पूर्व में।
- **आराकनयोमा** – म्यांमार में, चाय उत्पादन क्षेत्र।
- **सुलेमान व किरधर** – पाकिस्तान (पामीर के दक्षिण में)।
- **सॉल्ट रेंज** – सुलेमान के पूर्व में, नमक उत्पादन।
- **खेबर दर्रा** – किरधर में (पाकिस्तान)।
- **हिन्दुकुश** – अफगानिस्तान।
- **जाग्रोस** – दक्षिण-पश्चिम एशिया में।

एशिया के प्रमुख क्षेत्र व देश-

क्षेत्र	देश
पश्चिमी एशिया	ईरान, ईराक, सऊदी अरब, यमन, ओमान, UAE, कतर, बहरीन, इजरायल, लेबनान, जॉर्डन, सीरिया, जॉर्जिया, अर्मेनिया, अजरबैजान
मध्य एशिया	कजाकिस्तान, किर्गिस्तान, तजाकिस्तान, उज्बेकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान
दक्षिणी एशिया	भारत, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, नेपाल, भूटान, श्रीलंका, बांग्लादेश, मालदीव
उत्तरी एशिया	रूस
पूर्वी एशिया	चीन, उत्तर कोरिया, दक्षिण कोरिया, जापान, ताइवान, मंगोलिया
दक्षिण-पूर्व एशिया	म्यांमार, लाओस, थाईलैंड, कंबोडिया, वियतनाम, इंडोनेशिया, मलेशिया, सिंगापुर, फिलीपींस

एशिया महाद्वीप की प्रमुख झीलें-

1. **कैस्पियन सागर** – विश्व की **सबसे बड़ी झील (**खारे पानी की) – **क्षेत्रफल: - 3.71 लाख वर्ग किमी.**
- स्थित देश: **ईरान, तुर्कमेनिस्तान, कजाकिस्तान, रूस, अजरबैजान**
- इसमें **वोल्गा व यूराल नदियाँ** गिरती हैं।
- आकार में **राजस्थान से भी बड़ी**।

2. **मृत सागर – इजरायल और जॉर्डन** के बीच स्थित।
- समुद्र तल से **सबसे नीचा स्थल (397** मी. नीचे)।
- विश्व की **दूसरी सबसे खारी झील –** लवणता: **238 ग्राम/लीटर**।

3. **वॉन झील – तुर्की** में स्थित।
- विश्व की **सबसे खारी झील –** लवणता: **330 ग्राम/लीटर**।

4. **बैकाल झील – रूस** में स्थित।
- विश्व की **सबसे गहरी मीठे पानी की झील (1,620** मीटर)।
- **लीना और अंगारा** नदियों का उद्गम स्थल।

5. **अरल सागर**
- इसमें **अमू दरिया** और **सिर दरिया** नदियाँ गिरती हैं।
- पहले **68,000** वर्ग किमी. में फैली थी**,** अब केवल **10% हिस्सा बचा है**। मानवीय गतिविधियों के कारण तेजी से सूख रही है।

6. **टोबा झील – सुमात्रा (इंडोनेशिया)** द्वीप पर स्थित।
- विश्व की सबसे बड़ी **क्रेटर झील (**ज्वालामुखीय उद्गम की)।

अतिरिक्त तथ्य-
- पृथ्वी का **29.2% भू-भाग** व **70.8% जल-भाग** है।

एशिया के प्रमुख द्वीप
- **अरब प्रायद्वीप -** यह विश्व का सबसे बड़ा प्रायद्वीपीय क्षेत्र है।
- **बोर्नियो -** यह प्रशांत महासागर में स्थित एशिया का सबसे बड़ा द्वीप है, जो प्रशासनिक दृष्टि से तीन देशों इण्डोनेशिया, मलेशिया, ब्रुनेई देश के अधीन है।
- **फिलीपीन्स -** यह विच्छिन्न लम्बाकार देश है। राजधानी मनीला, यहाँ एशियन विकास बैंक का मुख्यालय स्थित है। अंतर्राष्ट्रीय चावल अनुसंधान केन्द्र स्थित है। Miracle Rice के लिए प्रसिद्ध है।
- **मलेशिया -** कालीमंतान - टिन उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है।
- **जावा द्वीप –** इण्डोनेशिया, इण्डोनेशिया की राजधानी जकार्ता इस द्वीप पर स्थित है।

एशिया के प्रमुख पर्वत

क्र.	पर्वत / पर्वत श्रेणी	स्थान	प्रमुख चोटी/ ऊँचाई (मी.)	विशेषता
1	हिमालय	भारत, नेपाल, भूटान, चीन	माउंट एवरेस्ट / 8848.86	विश्व की सर्वोच्च चोटी
			कंचनजंघा / 8598	भारत में सर्वोच्च (सिक्किम)
			नामचा बरवा /7756	पूर्वी चोटी (अरुणाचल)
			नंगा पर्वत /8126	पश्चिमी चोटी (J&K)
2	काराकोरम	भारत (P–K), चीन	K2 (गॉडविन ऑस्टिन) / 8611	विश्व की दूसरी सर्वोच्च
3	अरावली	राजस्थान, गुजरात आदि	गुरु शिखर / 1722	विश्व की सबसे प्राचीन
4	एल्बुर्ज	ईरान	माउंट देवमंद /5610	मृत ज्वालामुखी, सूखे मेवे
5	जाग्रोस	ईरान	माउंट देना /4410	फल व मेवे की खेती
6	कक्कर पर्वत	टर्की (उत्तर)	माउंट कक्कर -	-
7	टौरस पर्वत	टर्की (दक्षिण)	डेमिरकजिक /3756	-

एशिया के प्रमुख पठार-

क्रम	पठार	स्थान	विशेषता
1	तिब्बत पठार	चीन	विश्व का सबसे ऊँचा व बड़ा पर्वतीय पठार
2	पामीर पठार	मध्य एशिया	विश्व की छत, कई पर्वत शृंखलाओं की गाँठ
3	ईरान पठार	ईरान	एलबुर्ज व जाग्रोस के बीच
4	कोरात पठार	थाईलैंड	नेखेन रटचा सीमा
5	मंगोलिया पठार	चीन-मंगोलिया	गोबी मरुस्थल इसके दक्षिण में
6	यूनान पठार	चीन	खनिज (टिन, कोयला, लोहा)
7	शान पठार	म्यांमार	टिन उत्पादन के लिए प्रसिद्ध
8	तकलामाकन पठार	चीन (तारिम बेसिन)	तियानशान के उत्तर में
9	दक्कन पठार	भारत	प्राचीन गोंडवाना भूमि
10	छोटा नागपुर पठार	भारत	रूर क्षेत्र, खनिज समृद्ध
11	पोतवार पठार	पाकिस्तान	सॉल्ट रेंज पहाड़ियाँ स्थित

एशिया की प्रमुख नदियाँ-

यांग्त्सी-क्यांग नदी
- एशिया की सबसे लंबी (6400 किमी) व विश्व की तीसरी सबसे लंबी नदी
- उद्गम- तिब्बत के जरी पहाड़ियाँ (चीन)
- प्रमुख नगर- वुहान, शंघाई
- गिराव- पूर्वी चीन सागर

ह्वांग हो नदी (Yell–w River)
- उद्गम- बयान हर पहाड़ियाँ (चीन)
- गिराव- पीला सागर
- विशेषता- लाल-पीली मिट्टी बहाकर लाती है, "चीन का शोक"

मेकांग नदी
- उद्गम- चीन
- बहाव- म्यांमार, लाओस, थाईलैंड, कंबोडिया, वियतनाम
- गिराव- दक्षिणी चीन सागर
- विशेषता- ASEAN देशों की प्रमुख नदी

इरावदी नदी-
- उद्गम- अराकान योमा (म्यांमार)
- प्रमुख नगर- मांडले, रंगून
- गिराव- अंडमान सागर (मर्तबान की खाड़ी)
- म्यांमार को दो भागों में विभाजित करती है

आमूर नदी
- उद्गम- मंयूरिचा पहाड़ियाँ (चीन)
- बहाव- चीन व रूस की सीमा
- गिराव- जापान सागर
- विशेषता- अंतरराष्ट्रीय सीमा नदी

आमु दरिया नदी
- उद्गम- पामीर पठार
- बहाव- अफगानिस्तान व तजाकिस्तान की सीमा
- मध्य एशिया की प्रमुख नदी

दजला (Tigris) व फरात (Euphrates) नदियाँ
- उद्गम - टॉरस पर्वत व आर्मेनियाई उच्चभूमि (टर्की)
- बहाव - टर्की, सीरिया, इराक
- गिराव- फारस की खाड़ी
- विशेषता- दजला-फरात बेसिन खजूर उत्पादन के लिए प्रसिद्ध
- प्राचीन मेसोपोटामिया सभ्यता इन्हीं नदियों के किनारे

सिंधु नदी
- उद्गम: तिब्बत
- बहाव: भारत, पाकिस्तान
- गिराव: अरब सागर
- विशेषता: 2.5 लाख वर्ग किमी अपवाह क्षेत्र, हिमालयी अपवाह तंत्र की प्रमुख नदी

ब्रह्मपुत्र नदी
- उद्गम: चेमायुगदुंग हिमानी, कैलाश पर्वत (तिब्बत)
- बहाव: तिब्बत (यारलुंग), भारत, बांग्लादेश
- गिराव: बंगाल की खाड़ी

शैक्षणिक मनोविज्ञान

- **मनोविज्ञान-** शिक्षा मनोविज्ञान का आधार मानव व्यवहार है और मनोविज्ञान शिक्षा को आधार प्रदान करता है।
- शिक्षा मनोविज्ञान सीखने के क्यों, कैसे और क्या से संबंधित है।
- मनोविज्ञान मानसिक प्रक्रियाओं, अनुभवों तथा व्यक्त और अव्यक्त दोनों प्रकार के व्यवहारों का एक क्रमबद्ध तथा वैज्ञानिक अध्ययन है।

मनोविज्ञान की उत्पत्ति

- **Psychology -** 'साइकोलॉजी' शब्द की उत्पत्ति यूनानी (ग्रीक) भाषा के दो शब्दों से हुई है-
  1. साइकी (Psyche) जिसका अर्थ है- आत्मा (Soul)
  2. लोगस (Logos) जिसका अर्थ है- अध्ययन (Study)
- इस प्रकार साइकोलॉजी (मनोविज्ञान) का अर्थ है- आत्मा का अध्ययन/विज्ञान का अध्ययन (Study of the Soul) ।

  नोट- ग्रीक नहीं होने पर इसे लैटिन भाषा माना जाएगा।

मनोविज्ञान का इतिहास

- **एबिंगहास** के अनुसार 'मनोविज्ञान का वर्तमान स्वरूप नया है परन्तु इसका इतिहास बहुत पुराना है।'
- मनोविज्ञान का अतीत 400 ई. पू. से प्रारंभ माना जाता है।
- अरस्तू (384 ई.पू. से 322 ई.पू.) ने दर्शनशास्त्र में आत्मा के अध्ययन की शुरुआत की थी और यही आत्मा का अध्ययन आगे चलकर आधुनिक मनोविज्ञान बना; इसलिए अरस्तू को मनोविज्ञान का जनक माना जाता है।
- अरस्तू की पुस्तक का नाम – **डी-एनिमा।**
- **प्लेटो (ई. पू. 5वीं-4वीं सदी) -** मनुष्य में आत्मा पायी जाती हैं जिसमें भाव होते हैं और उन्हीं भावों के कारण मनुष्य किसी परम सत्ता को ईश्वर मानता है। प्लेटो के अनुसार आत्मा ही परमात्मा है।
- कॉलसनिक के अनुसार मनोविज्ञान का वास्तविक जनक प्लेटो है।
- मनोविज्ञान का आरंभ अरस्तू के समय दर्शन शास्त्र के रूप में हुआ था, बाद में मनोवैज्ञानिकों के प्रयासों से धीरे धीरे यह दर्शन शास्त्र से अलग होकर एक स्वतंत्र विषय के रूप में सामने आया।

मनोविज्ञान का विकास-

1. आत्मा का विज्ञान (**Science of soul**)

- यूनानी दार्शनिक **प्लेटो, अरस्तू और देकार्ते** ने मनोविज्ञान को आत्मा का विज्ञान माना। मनोविज्ञान के यह परिभाषा लगभग 16 वीं शताब्दी तक लागू रही।
- लेकिन कालान्तर में आत्मा के विषय में सवाल पैदा हो गए।
- आत्मा क्या है, कैसी है एवं उसका रंग, रूप, आकार क्या है?
- मनोविज्ञान की यह विचारधारा आत्मा की व्याख्या, उसके अस्तित्व एवं प्रामाणिकता का उत्तर नहीं दे पाने के कारण 16वीं शताब्दी में अस्वीकार कर दी गई।

2. मन या मस्तिष्क का विज्ञान (**Science of mind**)

- 17 वीं शताब्दी में दार्शनिकों ने मनोविज्ञान को मन या मस्तिष्क का विज्ञान कहा।
- इस संदर्भ में इटली के दार्शनिक पोम्पोनॉजी ने मनोविज्ञान को नया अभिप्राय दिया, जिसे मन/मस्तिष्क का अध्ययन करने वाला विज्ञान कहा गया।
- इस विचारधारा के समर्थक- जॉन लॉक, कान्ट, स्पिनोजा, हॉब्स, रीड, ह्यूम और बर्कले है।
- आलोचना- मन अमूर्त व निजी है, हम दूसरों के मन को नहीं जान सकते है, मन अंतर्मुखी होता है।
- यह विचारधारा मन के स्वरूप तथा प्रकृति का निर्धारण न होने के कारण अस्वीकार कर दी गई।

3. चेतना का विज्ञान (**Science of Consciousness**)

- 19वीं शताब्दी में विलियम जेम्स, विलियम वुण्ट, जेम्स सल्ली, वाइव्स, टिचेनर और चेडविक आदि विद्वानों ने मनोविज्ञान को चेतना का विज्ञान कहा। इसी समय से मनोविज्ञान की स्वतंत्र विषय के रूप में उत्पत्ति मानी जाती है।
- यह सबसे कम समय तक प्रचलन में रहने वाली विचारधारा है।
- चेतना ही जीवन है जीवन ही चेतना है- इस आधार पर मनोविज्ञान की विषय वस्तु को चेतना के विज्ञान की संज्ञा दी गई, जिसका समर्थन विलियम वुण्ट, जेम्स सली, विलियम वाईब्स, टिचनर, चेडविक आदि मनोवैज्ञानिकों ने किया।
- आलोचना – मन दो प्रकार के होते है, चेतन मन और अचेतन मन।
- चेतन मन केवल 1/10 भाग होता है जबकि बाकी अचेतन मन होता है।
- इंग्लैण्ड के विद्वान विलियम मैक्डूगल ने अपनी पुस्तक "The Outline Psychology" में 'चेतना' शब्द की आलोचना की और चेतना को बुरा शब्द बताया।
- 'चेतना' शब्द के अर्थ के सम्बन्ध में एकमत न हो सके और यह अभिप्राय भी अस्वीकार कर दिया गया।

4. व्यवहार का विज्ञान (**Science of Behaviour**)

- 16 वीं शताब्दी मनोविज्ञान का वर्तमान अभिप्राय के आरम्भ में आया। इस विचारधारा के समर्थक - वुडवर्थ, थॉर्नडाइक, हल, मन, क्रो एण्ड क्रो, बोरिंग, वेल्ड, पावलॉव, स्किनर, हॉलैण्ड।
- **व्यवहार क्या है-** प्राणी या व्यक्ति जो भी क्रिया करता है वह व्यवहार है।
- जे.बी.वॉटसन - ''व्यवहार एकमात्र मानव की ऐसी विशेषता है जो सदैव सकारात्मक होती है।''
- प्रसिद्ध अमेरिकी मनोवैज्ञानिक J.B. वाटसन ने इसे व्यवहार का विज्ञान कहा, इसी कारण से J.B. वाटसन को व्यवहारवाद का जनक कहा जाता है।
- सन् 1913 में जॉन हॉपकिन्स विश्वविद्यालय में व्यवहारवाद की स्थापना J.B. वाटसन ने की थी।
- वाटसन का मत था कि मनोविज्ञान की विषयवस्तु चेतन या अनुभूति नहीं हो सकता है क्योंकि इसे प्रेक्षण ही नहीं किया जा सकता है।
- व्यवहारवाद में पर्यावरणीय कारकों को महत्त्वपूर्ण माना जाता है।
- मनोविज्ञान में व्यवहारवाद को द्वितीय बल (Second Force) के रूप में भी माना जाता है।
- व्यवहारवादी मनोविज्ञान को उद्दीपक-अनुक्रिया मनोविज्ञान (Stimulus-Responde Psychology) भी कहा जाता है,

क्योंकि जीव का प्रत्येक व्यवहार किसी न किसी तरह के उद्दीपक (Stimulus) के प्रति एक अनुक्रिया (Responses) ही होता है।

- वाटसन ने कहा "तुम मुझे एक बालक दो मैं उसे कुछ भी बना सकता हूँ, इंजीनियर, डॉक्टर, वकील, चोर, डाकू कुछ भी।"
- व्यवहारवाद के अनुसार मनोविज्ञान की अध्ययन विधि प्रयोग, अनुबंधन तथा प्रेक्षण विधि है।

नोट-

- साइकोलॉजी (मनोविज्ञान) शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग 16वीं सदी में सन् 1590 में **यूनानी दार्शनिक रूडोल्फ गोयक्ले** ने अपनी पुस्तक **साइकोलॉजिया (Psychologia)** में किया।
- कॉलसनिक के अनुसार मनोविज्ञान का जनक – प्लेटो।
- आधुनिक मनोविज्ञान का जनक – विलियम वुण्ट।
- प्रयोगात्मक मनोविज्ञान के जनक – विलियम वुण्ट।
- J.B. वाटसन ने मनोविज्ञान को व्यवहार का विज्ञान कहा, उसने मनोविज्ञान को वस्तुपरक बनाने के लिए उत्तेजक प्राणी तथा अनुक्रिया पर बल दिया।
- मनोविज्ञान तथा शिक्षा के शोधों में अंतराल मापन तथा क्रमिक मापन का प्रयोग सर्वाधिक होता है।
- अनुपात मापनी का उपयोग मनोवैज्ञानिक मापन न होकर भौतिक मापन में अधिक होता है।
- प्रसिद्ध जर्मन मनोवैज्ञानिक विलियम वुण्ट ने 1879 ई. में लिपजिंग (जर्मनी) के कार्लमार्क्स विश्वविद्यालय (कॉर्नविल्स) में मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं का अध्ययन करने के लिए प्रथम मनोविज्ञान प्रयोगशाला स्थापित की।

विलियम जेम्स-

- विलियम जेम्स (अमेरिकी विद्वान) द्वारा 1890 में 'The Principal of Psychology' पुस्तक लिखी गई।
- विलियम जेम्स ने दर्शनशास्त्र से मनोविज्ञान की विषय-वस्तु को अलग करते हुए, एक स्वतंत्र पुस्तक – 'The Principal of Psychology' लिखी।
- विलियम जेम्स को अमेरिकी मनोविज्ञान के जनक के रूप में भी जाना जाता है।

नोट-

- वर्ष 1879 में विलियम वुण्ट - लिपजिंग (जर्मनी) प्रथम मनोविज्ञान प्रयोगशाला ।
- वर्ष 1892 में अमेरिकन मनोवैज्ञानिक संघ स्थापना स्टेनले हॉल ने की।
- वर्ष 1892 में संरचनावाद की स्थापना हुई।
- वर्ष 1895 में प्रकार्यवाद की स्थापना हुई।
- वर्ष 1900 में मनोविश्लेषणवाद की स्थापना हुई।
- वर्ष 1913 में व्यवहारवाद की स्थापना हुई।
- वर्ष 1904 में इवान पावलॉव को नोबेल पुरस्कार दिया गया।
- वर्ष 1905 में बिने व साईमन द्वारा बुद्धि परीक्षण (प्रथम) किया गया।
- वर्ष 1905 में ब्रजेन्द्र नाथ सील द्वारा प्रयोगात्मक मनोविज्ञान प्रयोगशाला की स्थापना की गई।
- वर्ष 1908 में M.A. का विचार बिने (मानसिक आयु) द्वारा दिया गया।
- वर्ष 1912 में I.Q. का विचार स्टर्न ने दिया ।
- वर्ष 1912 - गैस्टाल्टवाद की स्थापना हुई।
- वर्ष 1915 में पहली भारतीय मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला प्रो. एन. एन. सेन गुप्ता द्वारा कलकत्ता विश्वविद्यालय में स्थापित की गई।
- वर्ष 1916 में कलकत्ता विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान का प्रथम विभाग खुला तथा वर्ष 1938 में अनुप्रयुक्त मनोविज्ञान का विभाग प्रारम्भ किया गया।
- वर्ष 1920 जर्मनी में गैस्टाल्ट मनोविज्ञान का उदय हुआ।
- वर्ष 1924 में भारतीय मनोवैज्ञानिक संघ स्थापना की गई।
- वर्ष 1928 में एन.एन. सेनगुप्ता व राधा कमल मुखर्जी ने सामाजिक मनोविज्ञान की पुस्तक लिखी।
- वर्ष 1953 में स्कीनर ने सांइस एण्ड ह्युमन विहेवियर प्रकाशित की।
- वर्ष 1954 में इलाहाबाद में मनोविज्ञान शाला की स्थापना की गई।
- वर्ष 1955 बंगलौर में नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ मेंटल हेल्थ एंड न्यूरोसांइसेस की स्थापना की गई।
- वर्ष 1989 में नेशनल अकादमी ऑफ साइकोलॉजी इण्डिया की स्थापना की गई।

मनोविज्ञान की परिभाषाएँ –

- **सामान्य परिभाषा** – मनोविज्ञान व्यक्ति के व्यवहार और अनुभव का वैज्ञानिक अध्ययन है।
- **वारेन के अनुसार** - मनोविज्ञान जीवधारी और वातावरण के बीच की अन्तः क्रिया से संबंधित विज्ञान है।
- **वाटसन –** मनोविज्ञान व्यवहार का सकारात्मक/धनात्मक/ निश्चित विज्ञान है।
- **क्रो व क्रो –** मनोविज्ञान व्यवहार और मानव-सम्बन्धों का अध्ययन है।

मनोविज्ञान अनुसंधान के चरण

1. समस्या का चयन
2. डाटा संग्रह
3. निष्कर्ष निकालना
4. निष्कर्ष पुनरीक्षण करना

मनोविज्ञान की प्रमुख शाखाएँ :–

–

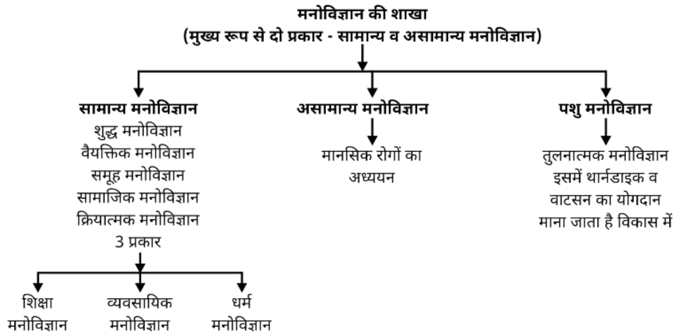

i. बाल मनोविज्ञान - मनोविज्ञान की वह शाखा जो बालक के प्रारंभिक विकास एवं व्यवहार से संबंधित अध्ययन करती है।

ii. सामान्य मनोविज्ञान – इसमें सामान्य परिस्थितियों में होने वाले व्यवहार का अध्ययन किया जाता हैं।

iii. असामान्य मनोविज्ञान- जब एक व्यक्ति सामान्य नहीं रहता तथा असामान्य, पागल, मनोरोगी या असामाजिक जैसा व्यवहार करता है तो उसका अध्ययन करना तथा मनोचिकित्सा से संबंधित मनोविज्ञान।

विज्ञापन

मुश्किल परीक्षाऐं भी आसान लगेगी
जब तैयारी होगी लक्ष्य के साथ

लक्ष्य क्लासेज उदयपुर

तृतीय श्रेणी (3rd Grade)

अध्यापक भर्ती परीक्षा

LEVEL-I and LEVEL-II

(हिन्दी, ENGLISH, संस्कृत, सामाजिक अध्ययन, SCIENCE-MATH)

- COURSE OFFERED -

- NOTES WITH LIVE FROM CLASSROOM BATCH
- MCQ BASED BATCH
- TASK BASED TEST SERIES
- NOTES WITH RECORDED BATCH
- OFFLINE CLASSROOM BATCH

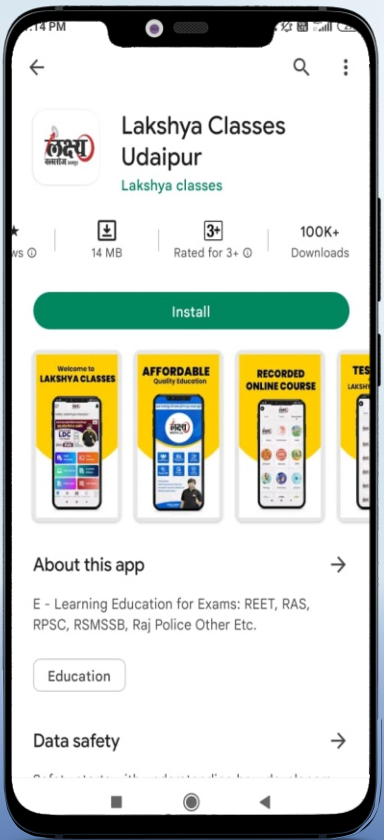

क्यों हैं लक्ष्य क्लासेज विशेष?

- व्यापक अध्ययन सामग्री
- MCQ की बुकलेट
- नियमित टेस्ट सीरीज
- पूर्णत: समर्पित यूट्यूब चैनल
- लाइब्रेरी सुविधा
- अनुभवी एवं योग्य फैकल्टी
- सुसज्जित स्मार्ट क्लासरूम
- ऑनलाइन एप्लीकेशन एक्सेस
- मासिक करंट अफेयर्स मैगज़ीन
- नियमित कांउसलिंग

MRP : ₹860

Scan to Download Lakshya App Now

Google play

INSTAGRAM FACEBOOK YOUTUBE TELEGRAM

S. No. : AP0024

CODE : APGC

सफलता के पथ पर सबसे तेज उभरता हुआ संस्थान

लक्ष्य क्लासेज™

M. 9079798005, 6376491126

Plot No 1104, Shiksha Mandir, Sec 4, Circle, Main Road, Udaipur